ओ३म्

सत्यार्थ-सन्देश

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास

नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १०

जीवेम शरदः शतम्

२७ मार्च २०१२

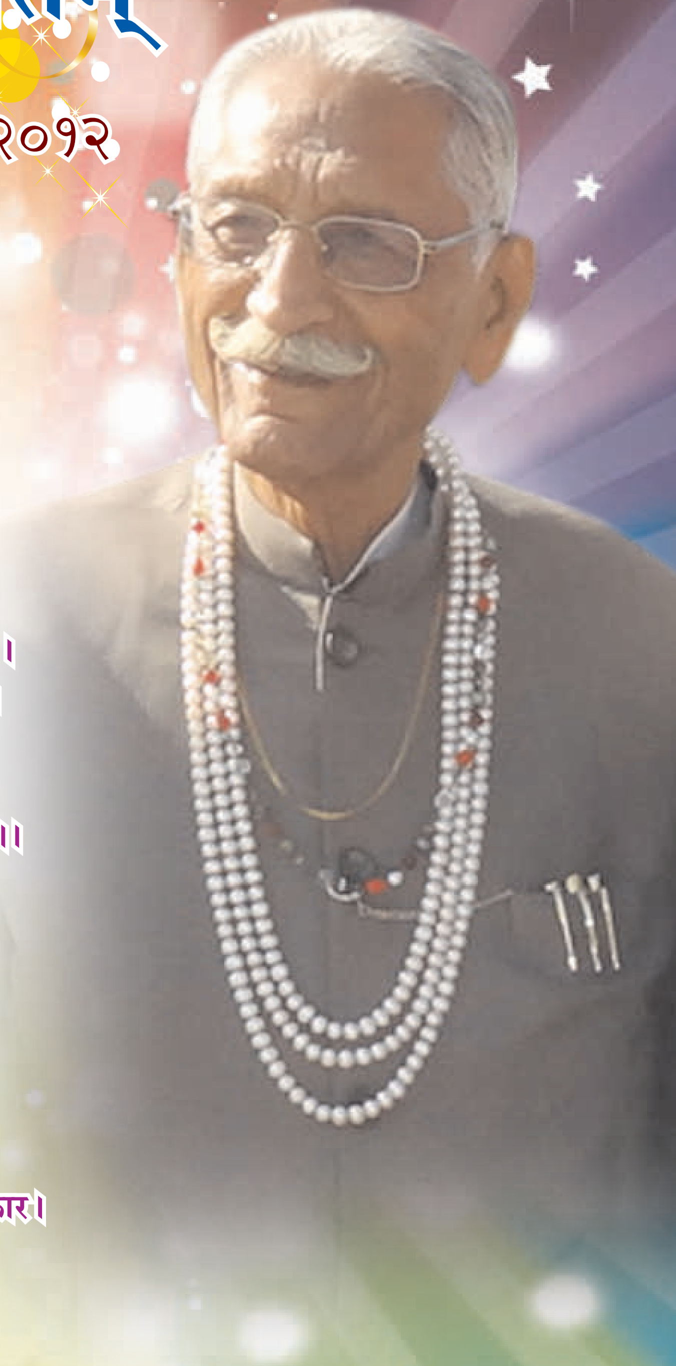

महाशय जी उवाच

सम्मान सफलता मिले उसी को, करता जो संघर्ष ।
परहित में जब कदम बढ़ें, तो मिलता हरदम हर्ष ।।

अंदर का अज्ञान मिटे, बाहर भी फैले प्रकाश ।
स्वप्न सभी साकार हों , पाएँ उन्नति का आकाश ।।

मन में हो परमार्थ भाव, तन से हो संघर्ष ।
यश बढ़ता संसार में, मिलता हर क्षण हर्ष ।।

पूज्य पिता की प्रेरणा, है संतति का मूल ।
सेवा और सत्कर्म से, खिलें खुशी के फूल ।।

मन में बहे स्नेह की सरिता, तन से हो नित परोपकार ।
मिलती सच्ची खुशी तभी, खुश होता संसार ।।

अपने मन में सदैव दूसरों के लिए स्नेह-रस का सागर जिनके हृदय में उमड़ता है, और जो इस सागर में समस्त संसार को रसपान कराने के लिए सतत् उद्यत रहता है उसी का यश संसार में बढ़ता है। हमारे महाशय जी ठीक ऐसे हैं। उनके ८९ वें जन्मदिन पर परमपिता परमात्मा से उनके निरामय दीर्घायुष्य के लिए सत्यार्थ-सन्देश परिवार प्रार्थना करता है ।

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

सत्यार्थ - सन्देश

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ-सन्देश

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

संपादक

अशोक आर्य

सहयोग ◆ भारत	विदेश
संरक्षक - ११००० रु.	$ 1000
आजीवन - १००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय - ४०० रु.	$ 100
वार्षिक - १०० रु.	$ 25
एक प्रति - १० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट **श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास** के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, उदयपुर खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११२
फाल्गुन शुक्ल पक्ष
विक्रम संवत्
२०६८
दयानन्दाब्द
१८९

हमको भी जीने दो

१२ | Give up meat eating

०८ | चौदह नली की पिचकारी से

०९ | नागरिकों में विभाजन ?
बस ! अब और नहीं

२९ | सावधान
जल संकट

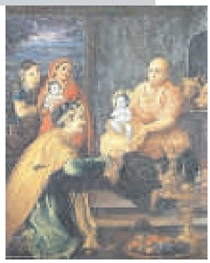

१७ | अतिथि कब आओगे ?

समाचार | २३

२४ | हलचल

०४ वेद सुधा
०६ वासन्ती नवसस्येष्टि यज्ञ
१५ मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
१६ दूसरों के लिये
२५ आत्मनिरीक्षण

सत्यार्थ संदेश में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

स्वामी एवं प्रकाशक "श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास" उदयपुर | मुद्रक : चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.), उदयपुर

प्रकाशक

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६६४ , ६३१४५३५३७६, ६८२८६२६७४७
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail-com,

ओ३म्

वेद सुधा

कनिक्रदज्जनुशं प्रब्रुवाण, इयर्ति वाचम् अरितेव नावम्।
सुमङ्गलश्च शकुने भवासि, मा त्वा काचिद् अभिभा विश्व्या विदत्।।१।। ऋग्वेद-२.४२.१

हे शकुनि, हे पक्षी, तू अपनी जिह्वा को प्रेरित करके मधुरवाणी में कूजन करता हुआ, मानो, जन्मधारी मनुष्यों को मधुर भाषण दे रहा है। हे प्यारे पक्षी, अपने सुरीले कण्ठ से हमारे लिये सदा ही मंगलप्रद हो। तू आनन्द से वृक्ष की शाखा पर बैठा हुआ कल-कूजन करता रह, कहीं से भी कोई संकट तुझे प्राप्त न हो। हे गुरु, हे आचार्य, हे उपदेशक, हे संन्यासिन्, आप शकुनि हैं। आप सत् शास्त्रों के उपदेश में अपनी जिह्वा को वैसे ही प्रेरित करते हैं जैसे नाविक चप्पुओं से चलायी जाने वाली नाव को प्रेरित करता है। नाविक के चप्पुओं से चलायी जाने वाली नाव यात्रियों को नदी के पार पहुँचा देती है। उसी प्रकार आपकी जिह्वा से उच्चारण किए जाने वाले शब्द श्रोता की कायापलट कर देते हैं। हे शकुनि, हे सशक्त वाणी वाले अपनी सशक्त वाणी से उपदेश करते हुए आप सदा ही हमारे लिए कल्याण बरसाते रहें। आपकी सत्य वाणी से जिनके कुचक्रों का भण्डाफोड़ होगा वे दुर्जन आपको सत्य कहने से विचलित करना चाहेंगे, आपके मार्ग में काँटे बिछायेंगे, आपको तरह-तरह के कष्ट देना चाहेंगे, किन्तु आप उनसे किंचिन्मात्र भयाक्रन्त न हों। विश्वव्यापी बड़े-से-बड़ा अभिभव भी आपको भय से उद्वेलित न कर सके। आप अपने सत्य के व्रत से कभी प्रच्युत न हों। आप नास्तिकों के कुतर्कों का खण्डन करने से भी विरत न हों। आप धर्मकार्यों के प्रचार से कभी विमुख न हों।

मा त्वा श्येन उद् वधीन् मा सुपर्णो, मा त्वा विददिषुमान् वीरो अस्ता।
पिन्र्यामनु प्रदिषं कनिक्रदत्, सुमङ्गलो भद्रवादी वदेह।।२।। ऋग्वेद-२.४२.२

हे शकुनि, हे तरु की डाल पर बैठे हुए सुन्दर पक्षी, सावधान रह, तुझे कहीं बाज झपटकर न ले जाये, कहीं गरुड़ तेरा सफाया न कर दे, कहीं बाणधारी कोई वीर धनुर्धर व्याध अपने बाण से घायल करके तुझे अपनी झोली के हवाले न कर ले। तू अपने माता-पिता से प्राप्त बोली के अनुरूप कूजन करता हुआ, सुमंगलदायी और भद्रवादी होता हुआ बोलता रह और हमें तृप्ति प्रदान करता रह।

हे गुरुवर, हे वन्दनीय आचार्य, हे उपदेशक, हे संन्यासिप्रवर, आप 'शकुनि' हैं, वेदादि सच्छास्त्रों के उपदेश में समर्थ हैं, सदाचार के शिक्षण में शक्त हैं। जैसे मनोहर शब्द करते हुए पक्षी की ताक में बाज और गरुड़ बैठे रहते हैं और धनुर्धर व्याध उन्हें अपने तीर का निशाना बनाने का अवसर देखते रहते हैं, वैसे ही मर्यादायों का उपदेश करते हुए आपको भी बाज और गरुड़ के समान अधिक बलशाली राक्षस-वृत्ति लोग, अपने शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित शत्रुजन हानि पहुँचाने की ताक लगाए रहते हैं। आप अपने सुलझे हुए तर्कों से शत्रु के कुतर्कों को खण्डित कीजिए। आप अपने ब्रह्मतेज से शत्रु के अपवित्र इरादों को पवित्र इरादों में परिवर्तित कीजिए। आप अपने सत्य के प्रभाव से असत्यमार्गगामी विरोधियों को परास्त कीजिए। आपके पितृजनों ने, आपके ज्ञानवृद्धों और वयोवृद्धों ने, आपके गुरुजनों ने जो दिशा निर्दिष्ट की है, तदनुसार आप संसार में असत्य, अन्याय, अत्याचार, अज्ञान आदि के विरोध में आवाज उठाते हुए बोलते रहें; भद्र भाषण करते रहें।

अव क्रन्द दक्षिणतो गृहाणां, सुमङ्गलो भद्रवादी शकुन्ते!
मा नः स्तेन ईशत माघशंसो, बृहद् वदेम विदथे सुवीराः।।३।। ऋग्वेद-२.४२.३

हे शकुनि, हे पक्षी, तू हम सब गृहवासियों के लिए सुमंगलकारी है, क्योंकि तू भद्र बोलनेवाला है। तेरी भद्र ध्वनि हमारे अन्तःकरण में शान्ति का संचार करती है। तेरा मधुर कूजन हमारे मानस में जागरण का संदेश देता है। तेरे स्वर में हमें ओंकार का गीत सुनाई देता है। तेरे स्वरों में हमें प्रभुभक्ति की स्वरलहरी सुनाई देती है। तेरे स्वर में हमें उद्गाता का सामगान

सुनाई देता है, अतः तू हमें अपने मनोहर गान सुनाए चला जा। हे विद्वन्, हे विद्याप्रचारक, हे उपदेशकप्रवर, आप 'शकुन्ति' हैं। ज्ञान-विज्ञान के प्रकाश में आप उड़ान भरनेवाले हैं। अपने सदुपदेश से आप दानव को देव बनाने में समर्थ हैं। अशान्ति

संसार में समस्त नाम वेद से ही लेकर रखे गये हैं। जब माता-पिता नाम रखते हैं तो सार्थक व अच्छा ही रखने का प्रयास करते हैं (मध्य कालीन समय अपवाद है, तब महर्षि दयानन्द ने सु-नामकरण-क्रान्ति प्रणीत की थी)। परन्तु व्यक्ति के कर्मों के आधार पर उसका नाम सुख्यात अथवा कुख्यात हो जाता है। रावण भी ऐसा ही नाम है तथा महाभारतस्थ शकुनि भी। आज कोई भी अपने बच्चों के ये नाम नहीं रखते। ये बुराई के प्रतीक बन गये हैं, अतः लोक में किसी को अपवचन कहने के लिए भी ऐसे शब्दों का भी प्रयोग कर लिया जाता है, यद्यपि यह प्रयोगकर्त्ता की रुग्ण मानसिकता का ही परिचायक होता है। वेद में शकुनि का क्या अर्थ तथा महात्म्य है। यह पठनीय है। -सम्पादक

के सन्ताप में दग्ध होते हुए जनों को दिव्य शान्ति की छाया प्रदान करने में समर्थ हैं। अपने उपदेशामृत का पान कराकर अमंगल से त्रस्त मानव को सुमंगल का अनुपम वर प्रदान करने में आप समर्थ हैं। आप 'भद्रवादी हैं। आपके वचनों में कल्याण का झरना बहता है। आपके वचन संसार में अभद्रता का विनाश कर भद्रता का सन्देश मुखरित करनेवाले हैं, अतः हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि अपने दिव्य वचनों का स्वर सदा ही आप गुँजाते रहें, परिव्राट् बनकर राष्ट्र के कोने-कोने में अपना जागृति का सन्देश आप प्रसारित करते रहें। हे राष्ट्रकोविद, अपनी अनुपम वाणी के द्वारा राष्ट्र के वातावरण को आप ऐसा बना दें कि राष्ट्र में चोरों का बोलबाला न हो, तस्कर-व्यापारी, घूसखोर, डकैत, लुटेरे आदि राष्ट्र में न पनपें। साथ ही 'अघशंसों' के चंगुल से भी आप हमें बचाएँ। जो लोग पाप की कमाई का चित्र खींच-खींचकर हमें पाप-कर्मों की ओर प्रलोभित करते हैं, उनके पापमय परामर्श से आप हमारी रक्षा कीजिए। हमें आप अपनी वाणी से ऐसा चरित्र-बल का पाठ पढाइए कि हम पाप-प्रशंसकों की लुभावनी बातों की ओर आकृष्ट न होकर निष्पाप जीवन को ही आदर्श मानते रहें।

हे विद्वत्प्रवर, आप हमारे अन्दर जागरण का ऐसा मन्त्र फूँक दीजिए कि अपने वीर पुत्र-पुत्रियों सहित हम जीवन-यज्ञ में और संसार के समरांगण में सदा महान् वचनों को ही बोलें, महत्वाकांक्षाओं को ही प्रकट करें, महत्ता के नाद को ही गुँजाएँ। आपके सदुपदेश से सब क्षुद्रताएँ हमारे बीच से सदा के लिए विलुप्त हो जाएँ। हे शकुनि, हे ज्ञान और कर्म के पंखों से ऊँची उड़ान भरनेवाले सुधी विद्वन्, आप हमें भी उच्च उड़ानों में समर्थ बनाइए।

डॉ. रामनाथ वेदालंकार साभार-वैदिक मधुवृष्टि

नव-संवत्सर व
आर्य समाज स्थापना दिवस
पर सभी को हार्दिक शुभकामनाऐं

विजय शर्मा
उपाध्यक्ष-न्यास

सत् साहित्य – विशेष छूट

		अंकित मूल्य	रियायती मूल्य
ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका (हार्ड बाउन्ड)		८० रु.	४० रु.
सत्यार्थ प्रकाश कवितामृत (कविवर जय गोपाल जी की अमर कृति काव्य सौदर्न्य से भरपूर)			
	सजिल्द	२५० रु.	१२५ रु.
	अजिल्द	२१० रु.	१०० रु.
सत्यार्थ प्रकाश मानक संस्करण		८० रु.	४० रु.
दयानन्द दर्शन (एक ऐसी भव्य चित्रकथा जो कि अनेक वेबसाईट और आर्य समाज के भवनों में शोभित है। प्रत्येक आर्य परिवार में संग्रह योग्य)			
	बड़ा आकार	२५० रु.	२२५ रु.
	पेपर बैक	१५० रु.	१२५ रु.

वासन्ती नवसस्येष्टि यज्ञ

होली का पर्व आज जिस रूप में मनाया जाता है,यह कहना कठिन है कि इसका प्रारम्भ किस प्रकार हुआ।परन्तु वासन्ती नवसस्येष्टि के रूप में अत्यन्त प्रचीन काल से यह मनाया जाता रहा है। हमारी परम्परा में 'समष्टि-कल्याण' प्रमुख है। हमें प्रत्येक कार्य के संदर्भ में यह सोचना आवश्यक है कि (१) इससे किसी की हानि न हो (२) इससे दूसरों का न्यूनाधिक लाभ हो। अपने सुख को, आनन्द को हम अन्यों के साथ बाँटे ऐसी दृढ़ पद्धति आवश्यक है। भारत एक कृषि प्रधान देश है। वसन्त के आगमन के साथ जहाँ प्रकृति की मनोरम छटा चित्ताकर्षक है, प्रफुल्लता दायिनी है,वहीं कृषक वर्ग का मन, उसका रोम-रोम आह्लादित है। आज उसका पुरुषार्थ फल देने जा रहा है। रबी की फसल तैयार हो गयी है। उसका स्वयं उपभोग भी करेगा तथा उसका विक्रय कर जीवन की अन्य आवश्यकताओं हेतु धन अर्जित करेगा? परन्तु यह लाभ तो स्वयं के तथा उसके परिवार के लिए है। वह क्या समष्टि को कुछ प्रदान नहीं करेगा? क्या अपने सुख में वह पड़ोसियों को सम्मिलित नहीं करेगा? क्या उसे वेद- आज्ञा का स्मरण नहीं है कि-'केवलाघो भवति केवलादी' अर्थात् जो अकेला खाता है वह पाप खाता है। अतः वह अपने अर्जन को अवश्य बाँटेगा। और बाँटने का सर्वश्रेष्ठ उपाय ऋषियों ने 'यज्ञ' को बताया है। अग्नि के द्वारा बाँटने में यह विशेष है कि जो किसी कारण से उससे मनोमालिन्य रखते हैं उन तक भी उसकी हवि का अंश पहुँचता है। अतः वह नवसस्येष्टि यज्ञ करेगा। यही कारण है कि रबी की फसल आने पर हम वासन्ती तथा खरीफ की फसल आने पर शारदीय नवसस्येष्टि यज्ञ करते हैं। और इस प्रकार त्याग की भावना से ओत-प्रोत हो बाँटने की प्रवृति का, पर-हित की भावना का विकास करते हैं।

यह पर-हित चिन्तन ही सामाजिक संगठन की धुरी है। कुछ देकर ही हम किसी के हो सकते हैं। चुम्बक लोहे के टुकड़े को पहले अपना चुम्बकत्व प्रदान करता है तभी लोहे का टुकड़ा उसकी ओर आकर्षित होता है। बिना दिये यह संभव नहीं। हम देना उसे ही चाहते हैं जिससे हम प्रीति करते हैं। प्रीति की अनुभूति के लिये द्वेष तथा अहंकार का परित्याग करना अपरिहार्य है। यह कोई साधारण कार्य नहीं है। यूँ तो अहंकार के विनाश के लिए हम दिन में दो बार तथा द्वेष के विनाश के लिये १२ बार परमात्मा की साक्षी में संकल्प करते हैं। परन्तु क्या हम द्वेष भाव को, अहंकार को छोड़ सके हैं?अगर ऐसा हो जाय तो हम प्राणी मात्र में आत्मीयता का अनुभव कर सकेंगे। अहंकार को छोड़ने के लिये, उसे अप्रभावी बनाने के लिये क्षमा-भाव का विकास करना होगा। यद्यपि त्याग और क्षमा में भी अहंकार प्रवेश करता दिख जाता है। इसका निरोध 'इदं न मम' के यज्ञीय सूत्र द्वारा ही हो सकता है। फिर भी अगर दूसरों की भूलों को क्षमा करने की ताकत हम पैदा कर लें तो बहुत सी समस्याएँ सुलझ सकती हैं।

होली का पर्व इसके लिये हमें अवसर प्रदान करता है। द्विदिवसीय इस पर्व के प्रथम दिन का नाम होली तथा दूसरे का नाम धुलैण्डी (धूल) कुछ संकेत देते हैं। वर्ष के दौरान मनों में जो दूरी उत्पन्न हुयी उसको यह कहकर समाप्त कर दिया जाय कि 'होली सो होली अब उस पर धूल डालते हैं।' अगर इस पर्व को क्षमा-पर्व के रूप में देखा जाय तो स्नेह के कुछ दीप जल सकते हैं। रंगीली होली का जो विकृत स्वरूप आज मिलता है उसमें कभी टेसू के फूलों से रंग बना होली खेली जाती थी। इस प्राकृतिक रंग से कम से कम बीमारी तो नहीं फैलती थी पर आज उसका स्थान जहरीले रसायन युक्त रंगो तथा कीचड़ न जाने किस-किस ने ले लिया है। 'गुलाल' का जहाँ तक प्रश्न है उसमें भी जहरीले रसायन मिला देते हैं, अतः इस रूप का समापन आवश्यक है। अगर अति आवश्यक है तो प्राकृतिक रंग से एक तिलक लगाना उचित होगा। चन्दन का लेप सर्वश्रेष्ठ है। आज पूरा विश्व जल संकट से जूझ रहा है, ऐसे में गीले रंग लगाने तथा फिर उसे छुड़ाने में पानी की बरबादी

मानवता के निकट अपराध जैसा है। हम सभी आज से अभी से, संकल्पित हों। पर्वों के प्रचलित रूप में सुधार लाने हेतु प्रेरणा करना बुरा नहीं माना जाना चाहिए। जो पर्व संगठन और मेल-मिलाप का पर्व था, वह शराब पीकर हुड़दंग करने, महिलाओं के साथ छेड़-छाड़ करने तक सिमट जाये तो उत्तम क्योंकर कहा जा सकता है? संगठन के इस त्यौहार पर हर शहर में आपको आपस में सर फुटाई कर अस्पताल में भर्ती कुछ लोग अवश्य मिल जाऐंगे। यह प्रशस्त क्योंकर हो सकता है? अतः इस पर्व को भाई-चारा बढ़ाने के पर्व के रूप में मनाने हेतु गम्भीर प्रयास होने चाहिये। **एक और प्रक्रिया इस पर्व में जुड़ी है। वह है जगह-जगह चौराहों पर लकड़ियाँ इकट्ठा कर उन्हें जलाना। इससे एक पौराणिक कथा जुड़ी है। प्रह्लाद को मारने हेतु उसके पिता ने अपनी बहिन अर्थात् प्रह्लाद की बुआ की गोद में बिठा उसे जिन्दा जला दिया। प्रह्लाद तो न जला पर होलिका नाम्नी बुआ जल गई। फिर नृसिंह अवतार का वर्णन है-आदि.....। पर हमारा विश्वास है कि यह नवसस्येष्टि यज्ञ का ही विकृत रूप है क्योंकि इस अग्नि में भी लोगों को नवान्न जिसका होलक नाम प्रसिद्ध है उसे सेंकते तथा वितरित करते देखा जाता है। जिस प्रकार अन्त्येष्टि संस्कार का दाह आज बिना घी, चन्दन तथा सामग्री के कर वातावरण को प्रदूषित कर दिया जाता है, वही इस विकृत होली में दृग्गत् होता है। पर्यावरण प्रदूषण के साथ ही एक गम्भीर चिंता का विषय यह भी है कि इस एक दिन में जितनी लकड़ी जला दी जाती है, अब वह चिन्त्य स्थिति आ चुकी है कि तुरन्त प्रभाव से इस पर समाज शास्त्रीयों व पर्यावरणविदों को विचार करना चाहिये। सर्वश्रेष्ठ तो यह ही है कि नवसस्येष्टि यज्ञ ही प्रचलन में आवें। फिर भी** आवश्यक हो तो इतना तो तुरन्त करना चाहिये कि बजाय गली-गली में होली जलाने के, जिस प्रकार एक नगर में एक विशाल मैदान में रावणादि का दहन किया जाता है उसी प्रकार एक होली ही जले। **ताकि लकड़ी बचे, पर्यावरण प्रदूषण अपेक्षाकृत न्यून हो।**

प्रभुकृपा करें! संगठन की दृष्टि से इस पर्व का महत्व हम सब समझें। अहंकार व द्वेष का परित्याग करें। वर्ष भर में जो अप्रिय हुआ, उसे भुला स्नेहसूत्र में हम सब बँधे।

आयें जल बचायें, वन बचायें।

अशोक आर्य
चलभाष - ०६३१४२३५१०१, ०६००१३३६८३६

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सन्देश (₹ ११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओम् आनन्द सरस्वती
चित्तौड़गढ़

स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती
पिण्डवाडा

श्री रतिराम शर्मा
सिलीगुड़ी

श्री भवानीदास आर्य
उदयपुर

श्री आनन्द कुमार आर्य
कोलकाता

श्री दीनदयाल गुप्त
कोलकाता

श्री बी.एल. अग्रवाल
जयपुर

कै. देवरत्न आर्य
मुम्बई

श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल
अहमदाबाद

श्री चन्दूलाल अग्रवाल
अहमदाबाद

श्री मिठाईलाल सिंह
मुम्बई

श्री आर. डी. गुप्ता
गाजियाबाद

श्री नारायणलाल मित्तल
उदयपुर

श्रीमती पुष्पा गुप्ता
उदयपुर

श्रीमती शारदा गुप्ता
उदयपुर

(स्व.) पं. पन्नालाल पीयूष
उदयपुर
पावन स्मृति में - सुधाकर पीयूष(पुत्र)

(स्व.) आचार्य प्रेमभिक्षु
मथुरा
पावन स्मृति में - आभाआर्या (पुत्रवधु)

श्री मोती लाल आर्य
आबूरोड़

"सत्यार्थ दूत"
श्रीमती सरोज वर्मा
जयपुर

प्रो. आई. जे. भाटिया
नासिक

श्री राजकुमार गुप्ता एवं श्रीमती सरला गुप्ता
उदयपुर

आर्य समाज
गाँधीधाम
गुजरात

आर्य परिवार
संस्था
कोटा-राजस्थान

यह भी एक होली थी ......

चौदह नली की पिचकारी से,
जोगी ने रंग खेला
दस रंगों में भरा बसंती, काला चार उडेला
चौदह नली.........
जोगी की कुछ अद्भुत् माया, काला करे उजाला
चौदह नली.........
जोगी होली खेलन आया, लगा जगत् का मेला
वार न इस पिचकारी का, गया किसी से झेला
चौदह नली.........

- पू. स्वामी समर्पणानन्द जी

चौदह नली

अर्थात्

(सत्यार्थ-प्रकाश)

का प्रभाव

जन सामान्य सत्य को स्वीकार कर

पार्थिव आराध्य-प्रतिमाओं को गंगा में

विसर्जित करते हुए

साम्प्रदायिक एवं लक्षित हिंसा रोकथाम विधेयक

बाल गंगाधर तिलक, महर्षि अरविन्द, लाला लाजपत राय, स्वामी दयानंद सरस्वती जैसे राष्ट्रवादियों की बात तो दूर समाजवादी आचार्य कृपलानी, मार्क्सवादी बी.टी. रणादिवे, सर्वोदय नेता लोकनायक जयप्रकाश नारायण जैसे लोगों पर भी सांप्रदायिक विद्वेष फैलाने, कथित अल्पसंख्यकों को आहत करने एवं दुष्प्रचार करने के आरोप में न सिर्फ उनके लेखों एवं प्रकाशित भाषणों पर प्रतिबंध लग सकता है बल्कि उन सब पर मरणोंपरांत मुकदमा भी चल सकता है। यह बात अतिशयोक्ति या व्यंग्यपूर्ण नहीं एक कटु सत्य है।

जे.पी. पर १९४६ में मुस्लिम लीग ने सूखा-बाढ़ राहत के दौरान हिन्दुओं को मुस्लिमों के खिलाफ भड़काने का आरोप लगाया था। केरल में मार्क्सवादी सरकार द्वारा पचास के दशक में नई शिक्षा नीति लागू की गई थी। ईसाईयों ने उसका जमकर विरोध किया था। तब रणादिवे ने कैथोलिक समुदाय को प्रतिक्रियावाद का एजेंट एवं उनपर विदेशी धन का दुरुपयोग करने का आरोप लगाया था। आचार्य कृपलानी के एक भाई का इस्लाम में धर्म परिवर्तन कराया गया था। उसने अपने एक और भाई का अपहरण कर जबरन इस्लाम में धर्म परिवर्तन करा दिया था। तब कृपलानी ने इस्लाम पर टिप्पणी करते हुए कहा था कि यह व्यक्ति को क्रूर बनाकर धर्म के प्रति अंधभक्ति पैदा कर देता है। ये सभी बातें आपराधिक कानून के अंतर्गत आ जाएगी यदि प्रिवेंशन ऑफ कम्यूनल एंड टारगेटेड वायलेंस बिल-२०११ कानून बन जाता है।

इस विधेयक के मसौदा पर गौर करने पर ऊपर कही गई बातों से कहीं अधिक घातक और षड्यंत्र से पर्दा उठता है। विधेयक में कुल नौ अध्याय और १३८ धाराएँ हैं। सबसे मजेदार बात यह है कि विधेयक क्यों लाया जा रहा है, इसका उद्देश्य क्या है इस पर एक शब्द भी नहीं है। अर्थात् कोई प्रस्तावना नहीं है। विधेयक के पहले अध्याय में अवधारणाओं को परिभाषित किया गया है। यही परिभाषा संविधान, समाज और शासनतंत्र को तार-तार कर देती है। यह देश के नागरिकों का शत्रुतापूर्ण भाव रखने वाला दो वर्ग करता है। एक वर्ग में 'धार्मिक और भाषायी अल्पसंख्यकों एवं अनुसूचित जातियों एवं जनजातियों' को रखा गया। इसे 'ग्रुप' के द्वारा संबोधित किया गया है। अनुसूचित जातियों एवं जनजातियों के लिए अलग आयोग और कानून है। उन्हें हर जगह अल्पसंख्यक मंसूबों पर पर्दा डालने के लिए ढाल के रूप में उपयोग किया जा रहा है। इसके पहले भी सच्चर कमेटी की अनुशंसा पर अल्पसंख्यक मामलों के मंत्रालय द्वारा प्रस्तावित 'समान अवसर आयोग विधेयक' में भी कथित अल्पसंख्यकों के साथ अनुसूचित जातियों को रखा गया था। भाषायी अल्पसंख्यकों का वजूद क्या है यह रंगनाथ मिश्र आयोग (राष्ट्रीय भाषायी और धार्मिक अल्पसंख्यक आयोग) के मसौदा से जाहिर होता है। भाषायी अल्पसंख्यकों के अस्तित्व पर ही आयोग ने सवाल खड़ा कर दिया है। अतः यहाँ 'ग्रुप' का तात्पर्य मूलतः मुसलमान और ईसाई समुदायों से है। ग्रुप से बाहर के लोगों को 'अन्य' (others) माना गया है। भारत के नागरिकों को दो अलग और शत्रुतापूर्ण वर्गों में विभाजित करने के बाद 'सांप्रदायिक दंगा' 'लैंगिक अपराध' 'विद्वेषपूर्ण प्रचार', इत्यादि को परिभाषित किया गया है। दो सम्प्रदायों के बीच हिंसक वारदात को दंगा माना जाता है। इस विधेयक के अनुसार सिर्फ अल्पसंख्यकों यानी ग्रुप के सदस्य के जान-माल की किसी भी प्रकार की क्षति 'साम्प्रदायिक और उद्देश्यपूर्ण हिंसा' मानी गयी है। अगर हिन्दुओं की जान-माल की क्षति अल्पसंख्यकों के सदस्यों द्वारा पहुँचायी जाती है तो यह साम्प्रदायिक या उद्देश्यपूर्ण हिंसा नहीं मानी जाएगी। (देखें क्लाज ३ (C)। अल्पसंख्यक समुदाय के किसी व्यक्ति के व्यापार में बाधा पहुँचाने या जीवकोपार्जन में अड़चन पैदा करने या सार्वजनिक रूप से अपमान करने को शत्रुतापूर्ण वातावरण बनाने के लिए अपराध माना गया है।

कोई हिन्दू मारा जाता है, घायल होता है, उसकी संपत्ति नष्ट हो जाती है, वह अपमानित होता है, उसका बहिष्कार होता है तो यह कानून उसे 'पीड़ित' नहीं मानेगा। 'पीड़ित' व्यक्ति इस मसौदे के अनुसार सिर्फ वही है जो इस 'ग्रुप' का सदस्य है। अगर हिन्दू महिला किसी अल्पसंख्यक की हवश का शिकार होती है तो यह कानून उसे बलात्कार नहीं मानेगा। इस विधेयक (क्लाउज ७) के अनुसार अगर अल्पसंख्यक महिला के साथ कोई इस प्रकार की घटना ग्रुप के बाहर के व्यक्ति के द्वारा घटती है तो उसे लैंगिक अपराध के लिए दोषी माना जाएगा। अर्थात् इमराना के श्वसुर द्वारा इमराना के साथ 'बलात्कार' इस मसौदे के अनुसार बलात्कार नहीं था। 'गवाह' की नई परिभाषा रची गई है। अल्पसंख्यकों के साथ घटी घटना की जानकारी रखनेवाला ही 'गवाह' होगा। बहुसंख्यकों के संबंध में जानकारी रखनेवाला गवाह नहीं माना जाएगा। 'दुष्प्रचार' को दूसरे अध्याय के क्लाउज आठ में ऐसे परिभाषित किया गया है कि इतिहास से लाल-बाल-पाल, जैसे चिंतकों का लेखन प्रतिबंधित तो हो ही जाएगा, पंथनिरपेक्षता पर वैकल्पिक बहस समाप्त हो जाएगी। आप बाइबिल, कुरान, मुस्लिम पर्सनल लॉ, मुस्लिम रीतियों-कुरीतियों, अल्पसंख्यक माँगों आंदोलनों, संगठनों पर टीका-टिप्पणी, विमर्श नहीं कर सकते हैं। कोई भी 'दूसरा' व्यक्ति (हिन्दू) अगर बोलकर या लिखकर या विज्ञापन, सूचना या किसी भी तरह से ऐसा 'कुछ' भी करता है जिसे अल्पसंख्यकों के किसी व्यक्ति या समुदाय के विरुद्ध भड़काउ स्थिति पैदा करने वाला मान लिया जाता है तो उसे दुष्प्रचार-घृणा फैलाने के लिए अपराधी माना जाएगा। इतिहासकार मुसिरुल हसन ने तो लाल-बाल-पाल पर अल्पसंख्यकों को स्वतंत्रता आंदोलन में अलग-थलग करने के लिए दोषी माना था। लाल-बाल-पाल को प्रकाशित करने, पढ़ने और उद्धृत करने वाले जेल जाने के लिए तैयार रहें।

विधेयक में कोई कसर नहीं छोडी गयी है। हिन्दू संगठनों को निशाना किस चतुरता से बनाया गया है इसे देखिए। अगर कोई बहुसंख्यक समाज का व्यक्ति अल्पसंख्यक समाज के लिए किसी भी उपरोक्त बातों के लिए दोषी है तो उस संगठन के मुखिया पर भी अपराधिक कानून चलेगा जिससे उसका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष संबंध है। संगठन भले ही रजिस्टर्ड हो या नहीं। एक गाँव या शहर में क्लब है या रामलीला कमेटी है। उसके किसी सदस्य को अल्पसंख्यक पर छीटाकशी करने, बहिष्कार करने या व्यापार में परस्पर झगड़ा हो जाता है तो उस क्लब या रामलीला कमेटी के पदाधिकारियों पर अपराधिक मुकदमा चलेगा। व्यापार एवं रोजगार में यह विधेयक समुदायों के बीच अंतर्निर्भरता को पूरी तरह समाप्त कर देगा। राष्ट्र के बीच एक अघोषित सांप्रदायिक राष्ट्र को जन्म देगा। बचाव का क्या रास्ता है? अल्पसंख्यकों, पूजा, उनके मन, मानसिकता, मस्तिष्क के अनुकूल व्यवहार करें एवं दासत्व के भाव से रहें। किसी अल्पसंख्यक ने बहुसंख्यक से रोजगार या किराए पर घर माँग लिया तो बिना योग्यता या अनुकूलता का विचार किए आप यदि हाँ नहीं कहेंगे तो आप अपराधिक कानून के शिकार होंगे। शिया-सुन्नी झगड़ों पर, ईसाई-मुस्लिम झगड़े पर यह कानून लागू नहीं होगा। उन्हें दंगा करने का विशेषाधिकार दिया गया है। अनुसूचित जाति या जनजातियों को इस मसौदे में इसलिए रखा गया है कि उन पर ईसाई मिशनरियों द्वारा सुनियोजित धर्म परिवर्तन या इस्लामिक पेट्रो डॉलर का उपयोग का आरोप अब आप लगाएंगे, सत्य उजागर करेंगे तो आप पर अपराधिक कानून लागू होगा। एक और बात गौरतलब है कि इस मसौदे में कोई आरोपित नहीं बल्कि हर आरोपित स्वतः अपराधी मान लिया गया है। अब उसे साबित करना पड़ेगा कि वह अपराधी नहीं है।

पुलिस एवं नौकरशाही को अल्पसंख्यकों का अन्तःवस्त्र बनाकर छोड़ा गया है। कहीं भी कोई कथित अल्पसंख्यकों के विरुद्ध दुष्प्रचार, घृणा फैलाने वाला माहौल बना, कोई पोस्टर या लेख प्रकाशित हुआ या अल्पसंख्यक समुदाय के किसी व्यक्ति के जान-माल की कथित रूप से क्षति हुई तो पुलिस और प्रशासन को समान रूप से जिम्मेदार माना गया है। उनपर अपराधिक मुकदमा चलेगा। उनको अपनी बाल की खाल बचाने का एकमात्र यही एक रास्ता है कि कहीं भी कोई अंदेशा हो या नहीं हिन्दुओं को गिरफ्तार करते रहें। हिंदुओं के खिलाफ दुष्प्रचार, हिन्दू देवी देवताओं का अपमान या जान-माल की जितनी क्षति हो जाए पुलिस एवं प्रशासन को परेशान होने की आवश्यकता नहीं है। इस विधेयक ने दो प्रकार के अपराधिक कानून बनाया है। अब तक मुसलमानों के पास वैयक्तिक कानून था। अब

जब राजा न्यायासन पर बैठ न्याय करे, तब किसी का पक्षपात न करे किन्तु यथोचित दण्ड देवे।

महर्षि दयानन्द (सत्यार्थ-प्रकाश पृ. १७३)

अलग अपराधिक कानून भी उन्हें परोसा जा रहा है। एक देश दो विधान ही बिल के मसौदे का लक्ष्य नहीं है। इसने देश के संघीय ढांचे को भी नष्ट करने का उपाय किया। किसी भी राज्य में सांप्रदायिक स्थिति को 'आंतरिक गड़बड़ी' की संज्ञा देकर संविधान की धारा ३५५ के अंतर्गत केन्द्र से हस्तक्षेप करने की अनिवार्य अपेक्षा की गई है।सामान्य विधि के आधार पर पूरे संविधान में फेरबदल की साजिश नहीं तो और क्या है? राष्ट्रीय स्तर एवं राज्यों में इसके लिए प्राधिकार बनाया गया है। इसमें सात सदस्यों में चार अल्पसंख्यकों का होना अनिवार्य है। उनके अन्तर्गत पुलिस, प्रशासन और न्यायपालिका का अधिकार होगा। आरोपित व्यक्ति चाहे पुलिस या प्रशासनिक अधिकारी या हिन्दू नागरिक हो अपराधी मान लिया जाएगा। इसके क्लाउज ५८, ७३ एवं ७४ में पोटा की तरह प्रावधान हैं। हिन्दुओं की स्थिति नाजी जर्मनी के यहूदियों की तरह बना दी गई है। कथित अल्पसंख्यकों पर जुल्म के वे जिम्मेदार हैं। यह विधेयक मानता है कि घृणा, दुष्प्रचार, दंगा करना, असंवेदनशीलता हिन्दुओं का चरित्र है। इसे ऐतिहासिक सच और समकालीन वास्तविकता मान लिया गया है। और इसी चरित्र पर नियंत्रण करने के लिए सोनिया सलाहकार परिषद ने यह विधेयक तैयार किया है। भारत का पुलिस, प्रशासन एवं न्यायपालिका पूर्वाग्रहयुक्त एवं अल्पसंख्यक विरोधी है इसे स्थापित किया गया है। आखिर किसके दिमाग की यह खुराफाती साजिश है? सोनिया गांधी की अध्यक्षता वाली राष्ट्रीय सलाहकार समिति ने यह विधेयक तैयार किया है। संविधानेत्तर इस संस्था में तीस्ता सेतलवाड, हर्ष मंदर, जॉन दयाल, जैसे वे नाम हैं जो विदेशी पैसे, प्रेरणा एवं प्रभाव के आरोपों में चमकते तारे की तरह सबको दिखाई पड़ रहे हैं। यह बिल मुस्लिम ईसाई प्रवक्ताओं द्वारा मुस्लिम-ईसाईयों का और हिन्दुओं को प्रताड़ित करने के लिए तैयार किया गया एक विष का पिटारा है जो खुलते ही समाज को सांप्रदायिक तनाव, तांडव नृत्य एवं अराजक स्थिति में ला खड़ा करेगा। हिन्दुओं को विलेन बनाकर इस देश में सांप्रदायिक राज स्थापित करने की वह साजिश है जो भारत की एकता, अखंडता को चुनौती दे रही है। १९३० एवं चालीस के दशक में मुस्लिम लीग ने तो विधान मंडलों में 'अल्पसंख्यक वीटो' हासिल किया था। सोनिया सलाहकार परिषद ने तो सड़क से लेकर संसद तक अल्पसंख्यक वीटो को कानूनी जामा पहनाने का काम किया है। यह विधेयक 'सिविल वार के भ्रूण अपने गर्भ में पाल रहा है यदि इसकी भ्रूण हत्या नहीं की गई तो हिन्दू समाज जर्मनी का यहूदी बनकर रह जाएगा। कुछ मसौदे ऐसे होते हैं जिनपर विमर्श होता है, कुछ पर विवाद, कुछ पर उपहास होता है, कुछ को कूड़ेदान में डाल दिया जाता है। स्वतंत्र भारत के इतिहास का यह पहला मसौदा है जिस पर ये सभी बातें कम पड़ जाती है। इसे जला देने की आवश्यकता है।

प्रो. राकेश सिन्हा

इस क्रम में जन-जागृति के उद्देश्य से आर्य समाज, सेक्टर-२४, गाँधीनगर (गुजरात) में ४ मार्च २००२, रविवार को 'सामाजिक चेतना परिसंवाद' का आयोजन किया गया है। पूर्वानुमति लेकर अवश्य भाग लें। **सुरेशचन्द्र अग्रवाल**
प्रधान-गुजरात प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा
०६८२४०७२५०६

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके,एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई हैः-
- सत्यार्थ प्रकाश (मानक संस्करण) की द्वितीय आवृत्ति छपने में है। कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थ प्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
एक लाख रु.	दस हजार	७५०००	७५००
५००००	५०००	२५०००	२५००
१००००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया,उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास
भंवरलाल गर्ग, कार्यालय मंत्री
डॉ.अमृत लाल तापड़िया, उपमंत्री-न्यास

जिन सज्जनों को यह पत्रिका प्राप्त हुई है, वे तो अवश्य ही 'सत्यार्थ - सन्देश' परिवार से तुरन्त जुड़ने की कृपा करें।

Give up meat eating ①

Dr. Harish Chandra

Courtsy-MEAT EATING An obstacle to our personal and global development
(Publisher-Om Shanti Dham-Bangalore)

Instinct versus intellect: Man is different from all other living species. Certainly, the members of no other species would get together and discuss what they should eat and what they should not. Probably, it is only men who is always confronted with what to do and what not to do. It is said that while other species posses instinct, men possesses an intellect, which is the reservoir of the wisdom to differentiate the truth from the falsehood, the right from the wrong, and so on. The intellect of ours is a tool that can function properly with adequate knowledge only. Thus, acquisition and transfer of knowledge has been one of the foremost functions of human beings. With right kind of knowledge in adequate measure, men's intellect obtains it's discriminatory ability, or the discerning ability.

While other species are never wrong, man is sometimes right and sometimes wrong too. We occasionally pardon ourselves on account of the so-called 'human errors'. The other species simply do not commit errors.

Developing Human Consensus: For the reasons indicated above, everybody's perception of right and wrong might differs from that of others. It seems that almost on all the issues that man would be related to, unanimous conclusions will never be reached. Even on the seemingly universal truths like, "all should speak the truth and only the truth", there will be disagreements due to the exceptional situations provided by national security, threat to one's life, and so on. The final result is that we all can almost never concur. Even though we know this, we still like to discuss and attempt to reach a point of maximum concurrence. That is the human destiny or the human sprit. In this sprit only the present book has been written. While a number of arguments would be made in favor of renunciation of meat, fish and eggs from the point of human consumption, it is well recognized that it is possible to present certain counter-arguments against the arguments presented herein. Then a point can be reached where two sides have to simply agree to disagree. As such, no argument looks quite invincible. Probably, more important is the truth then how it is arrived at. There are some truths, which get ingrained in mind since our childhood. We accept them as part of our knowledge, wisdom and even our personality, and rarely question them. In our childhood we get attached to a thing, say a tree in front of the house. The child spent several moments with that tree, playing on it's branches, sitting leisurely under it's shadow, and just watching its colorful leaves falling in the autumn. It becomes a part of the child's life for the years to come. The child, and some years later, even the grown up person, lives in harmony with that tree. This person is unlikely to hurt that tree or any tree for that matter. The person has learnt one lesson for the

entire life without much of the arguments-to live in harmony with the trees or even with the environment. This is a case of learning and accepting a truth without much of the arguments. We learns certain truths through direct life experiences, or through someone else's experiences, and not always through arguments.

Truth is easy to see: The point is that some people would simply accept a truth on the face of it's simple and plain statement; some people would need some arguments to accept those truths; and some people would not accept the truths even with all the finest arguments. It is easy to produce counter-arguments. If the purpose is to gain victory for self and defeat others than the game can be endless. However, if the purpose is to improve for self-betterment and for the world betterment than it is not difficult to see the strength of the arguments put forth in the following pages. *Ṛigveda* states *sugāḥ naḥṛtasya panthāḥ*. That is, may the paths of truth be easy for us.

Forceful Arguments can help spread truths: An analogy will probably show the need of the arguments to spread a truth of this kind, namely why we should not eat meat, fish and eggs. A good number of arguments have been made against the evil of smoking. The devil is ever present. But the effort goes on. It finally does pay of-the truth is accepted by a good majority of the population. Today smoking is considered a human vice. The truth has been established, thanks to the fine arguments made over a period of several years and a systematic concerted effort. Such a spirited effort is required in case of meat consumption too. **It is a far greater evil then smoking is because millions of innocent animals are killed every day.** The arguments presented in the following pages will probably do their bit.

Love can be without a cause: Our love toward another living being based on the arguments is good but the love may (or may not) disappear if the arguments are found to be hollow. But the love of the highest order seen in the world is that of a mother toward her child, and this love is based on no arguments-whether the child looks beautiful or not, the child has two eyes or only one eye functioning and so on. The mother's love is on different grounds and is simply based on the fact that the child was born by her. This does wonders to the child, gives him the warmth and security he needs most for his overall growth.

In other words, if we love all the living beings then that's it. No arguments are needed. Who can argue against our love for all the animals? And if we really love them then how can we imagine killing them(or causing them to be killed) simply for a part of(Or a number of) our meal(s) when several alternatives for our food exist.

A Mouse on a great mission: After the above brief discussion on arguments and counter arguments, let us take note of a narration the present author read many years ago. One American young man wrote how he became a vegetarian.

This is a case of direct life experience without any argument similar to the love between a mother and her child. Now

follows what that young American wrote about his seemingly bizarre experience. He was walking through the wilderness of florida. At one point he noticed two

mice walking together, one behind another and holding one common straw with their mouths. He did what a typical young man may be tempted to do out of his extreme self-pride and total disregard to other living beings. He picked up a stone and hit on the head of the front mouse that instantly died. Soon some strange behavior was in store for him. The rear mouse began to circle around the dead mouse. The young man was amazed to see that and curiously came closure to the seen. A closer look told him that the living mouse was blind. Now the things became clearer to him. He could understand that the front mouse was on a great mission - guiding the rear blind mouse through the woods. The young man, a member of the self proclaimed 'most developed' species was boundlessly ashamed of what he had done. What he had done was an irreversible act. He knew no matter what he did, he can not make the dead mouse alive, and of course, he can not become the substitute for it to help the blind mouse. He had had the first hand experience of the importance of an animal's life. His implicit belief that the human beings are supreme and the world, including the animal kingdom, is merely for our pleasure was shattered. He immediately gave up meat eating.

Undoubtedly, anyone who goes through the above experience will most likely renounce meat eating. Does everyone have to go through the above experience first hand? Why can the others not feel the same way through the reading of the above account itself ? May be, many readers will feel so. They will probably not have to read this book. But some may still like to read it.

A set of strong arguments can save millions of innocent lives. Every day millions of animals are killed for sake of human food. Human beings, by nature, are predominantly kind and loving. These traits can do wonders. All the conflicts and wars at different levels owe their origin to lack of mutual understanding and love. The purpose and scope of the book has been outlined that the book would present a set of strong arguments advocating us to renounce meat, fish and eggs. Furthermore, it has been said that the desirable human virtue of love can take birth even in the absence of the arguments. We are familiar with the mother-child love in the human society. In the present context, the experience of an American young man has shown that the life experiences sometimes do what the strongest arguments are unable to do.

मा सो अस्मान् द्विक्षत मा वयं तम् - अथर्व. १२.२.३३
'न वे हमसे द्वेष करें, न हम उनसे द्वेष करें।'

जिसमें आत्म-गौरव है, वह कोई भी चीज मुफ्त पाने की बजाय अपने पौरुष से पाना ज्यादा पसन्द करता है।
-स्वामी रामतीर्थ

कहाँ गये वो लोग

आज अनेक ऐसे भाई-बहिन हैं जो कल तक आर्य समाज में सक्रिय भूमिका निभा रहे थे। काल-क्रम के चलते हमारे मध्य भौतिक रूप से नहीं हैं। इनमें से कई के परिवार आर्य समाज से सम्पर्क बनाये हुऐ हैं कई के नहीं। इतने सक्रिय लोगों के निधन के पश्चात् उनका परिवार भी आर्य समाज से निरन्तर जुड़ा रहे यह अत्यन्त आवश्यक है। इसी भावना को लक्ष्य में रख न्यास ने निश्चित किया है कि उदयपुर व आस-पास के क्षेत्र में ऐसे सभी पूज्यजनों की स्मृति-सभा प्रत्येक माह प्रथम रविवार को न्यास परिसर में आयोजित की जावेगी, जिसमें उनके परिवारीजनों को विशेष रूप से आमंत्रित किया जावेगा। परिवारीजनों से विशेष अपेक्षा रहेगी कि वे अपना पूर्ण योगदान व स्वीकृति दें। ऐसे महानुभावों की सूची तैयार की जा रही है, पर कुछ नाम रह सकते हैं, अतः आप सभी से प्रार्थना है कि आपकी स्मृति में सुरक्षित ऐसे नामों से हमें अवगत करावें। विस्तृत कार्य-योजना शीघ्र आपके समक्ष आवेगी।

आपके सहयोग के आकांक्षी। संयोजक

विनोद राठौड़ ०९९८३८२२०२७

सुधाकर पीयूष ०९३५२५०६८१३

न्यास द्वारा समस्त संस्कारों की समुचित व्यवस्था।
सारी व्यवस्था हम करेंगे, आप केवल निम्न दूरभाष/चलभाष पर सम्पर्क करें।
०२९४-२४१७६९४, ०९३१४५३५३७९

मातृभूमि पर शीश चढ़ाने ...

आज लग रहा कैसा जी को, कैसी आज घुटन है
दिल बैठा सा जाता है, हर साँस आज उन्मन है।
बुझे बुझे मन पर ये कैसी, बोझिलता भारी है
क्या वीरों की आज कूच करने की तैयारी है?
हाँ सचमुच ही तैयारी यह, आज कूच की बेला
माँ के तीन लाल जाएँगे, भगत न एक अकेला।
मातृभूमि पर अर्पित होंगे, तीन फूल ये पावन,
यह उनका त्योहार सुहावन, यह दिन उन्हें सुहावन।
फाँसी की कोठरी बनी, अब इन्हें रंगशाला है
झूम झूम सहगान हो रहा, मन क्या मतवाला है।
भगत गा रहा आज चले हम, पहन वसंती चोला
जिसे पहन कर वीर शिवा ने, माँ का बंधन खोला।
झन झन झन बज रहीं बेड़ियाँ, ताल दे रहीं स्वर में
झूम रहे सुखदेव राजगुरु, भी हैं आज लहर में।
नाच नाच उठते ऊपर, दोनों हाथ उठाकर,
स्वर में ताल मिलाते, पैरों की बेड़ी खनकाकर।
पुनः वही आलाप, रंगें हम आज वसंती चोला
जिसे पहन राणा प्रताप, वीरों की वाणी बोला।
वही वसंती चोला हम भी आज खुशी से पहनें,
लपटें बन जातीं जिसके हित, भारत की माँ बहनें।
उसी रंग में अपने मन को, रँग-रँग कर हम झूमें,
हम परवाने बलिदानों की, अमर शिखाएँ चूमें।
हमें वसंती चोला माँ तू, स्वयं आज पहना दे,
तू अपने हाथों से हमको, रण के लिए सजा दे।
सचमुच ही आ गया निमंत्रण, लो इनको यह रण का,
बलिदानों का पुण्य पर्व यह, बन त्योहार मरण का।
जल के तीन पात्र सम्मुख रख, यम का प्रतिनिधि बोला,
स्नान करो, पावन कर लो, तुम तीनों अपना चोला।
झूम उठे यह सुनकर तीनों, ही अल्हण मर्दाने,
लगे गूँजने और तीव्र हो, उनके मस्त तराने।
लगी लहरने कारागृह में, इंक्लाव की धारा,
जिसने भी स्वर सुना वही, प्रति उत्तर में हुंकारा।
खूब उछाला एक दूसरे पर, तीनों ने पानी,

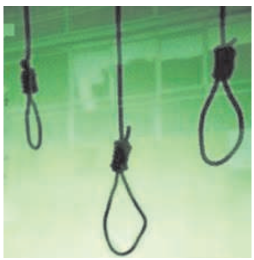

होली का हुड़दंग बन गई, उनकी मस्त जवानी।
गले लगाया एक दूसरे, को बाँहों में कस कर,
भावों के सब बाँढ़ तोड़ कर भेंटे वीर परस्पर।
मृत्यु मंच की ओर बढ़ चले, अब तीनों अलबेले,
प्रश्न जटिल था कौन मृत्यु से, सबसे पहले खेले।

शहीद राजगुरु

बोल उठे सुखदेव, शहादत पहले मेरा हक है,
वय में मैं ही बड़ा सभी से, नहीं तनिक भी शक है।
तर्क राजगुरु का था, सबसे छोटा हूँ मैं भाई,
छोटों की अभिलाषा पहले पूरी होती आई।
एक और भी कारण, यदि पहले फाँसी पाऊँगा,
बिना बिलम्ब किए मैं सीधा स्वर्ग धाम जाऊँगा।
बढ़िया फ्लैट वहाँ आरक्षित कर तैयार मिलूँगा,
आप लोग जब पहुँचेंगे, सैल्यूट वहाँ मारूँगा।
पहले ही मैं ख्याति आप लोगों की फैलाऊँगा,
स्वर्गवासियों से परिचय मैं, बढ-चढ़ कर करवाऊँगा।
तर्क बहुत बढ़िया था उसका, बढ़िया उसकी मस्ती,
अधिकारी थे चकित, देख कर बलिदानी की हस्ती।
भगत सिंह के नौकर का था, अभिनय खूब निभाया,
स्वर्ग पहुँच कर उसी काम को उसका मन ललचाया।
भगत सिंह ने समझाया यह, न्याय नीति कहती है,
जब दो झगड़ें, बात तीसरे की तब बन रहती है।
जो मध्यस्थ, बात उसकी ही दोनों पक्ष निभाते,
इसीलिए पहले मैं झूलूँ, न्याय नीति के नाते।
यह घोटाला देख चकित थे, न्याय नीति अधिकारी,
होड़ा होड़ी और मौत की, ये कैसे अवतारी?
मौत सिद्ध बन गई, झगड़ते हैं ये जिसको पाने,
कहीं किसी ने देखे हैं क्या इन जैसे दीवाने?
मौत, नाम सुनते ही जिसका, लोग काँप जाते हैं,
उसको पाने झगड़ रहे ये, कैसे मदमाते हैं।

भय इनसे भयभीत, अरे यह कैसी अल्हण मस्ती,
वन्दनीय है सचमुच ही इन दीवानों की हस्ती।
मिला शासनादेश, बताओ अन्तिम अभिलाषाएँ,
उत्तर मिला, मुक्ति कुछ क्षण को हम बंधन से पाएँ।
मुक्ति मिली हथकड़ियों से, अब प्रलय वीर हुंकारे,
फूट पड़े उनके कंठों से इन्क्लाब के नारे ।
इन्क्लाब हो अमर हमारा, इन्क्लाब की जय हो,
इस साम्राज्यवाद का भारत की धरती से क्षय हो।
हँसती गाती आजादी का नया सवेरा आए,
विजय केतु अपनी धरती पर अपना ही लहराए।
और इस तरह नारों के स्वर में वे तीनों डूबे,
बने प्रेरणा जग को, उनके बलिदानी मंसूबे।

शहीद भगतसिंह

शहीद सुखदेव

भारत माँ के तीन सुकोमल फूल हुए न्योछावर,
हँसते हँसते झूल गए थे फाँसी के फंदों पर।
हुए मातृवेदी पर अर्पित तीन सूरमा हँस कर,
विदा हो गए तीन वीर, दे यश की अमर धरोहर।
अमर धरोहर यह, हम अपने प्राणों से दुलराएँ,
सिंच रक्त से हम आजादी का उपवन महकाएँ।
जलती रहे सभी के उर में, यह बलिदान कहानी,
तेज धार पर रहे सदा, अपने पौरुष का पानी।
जिस धरती के बेटे हम, सब काम उसी के आएँ,
जीवन देकर हम धरती पर, जन मंगल बरसाएँ।।

– श्रीकृष्ण सरल साभार कविताकोश

दूसरों के लिए

एक बादशाह बड़ा ही न्यायप्रिय था। वह हर समय अपनी प्रजा की भलाई के लिए चिंतित रहता था। एक दिन वह शिकार करने जा रहा था। रास्ते में उसने देखा कि एक वृद्ध छोटा सा पौधा लगा रहा है। बादशाह उत्सुकतावश उसके पास गया और बोला-यह आप किस चीज का पौधा लगा रहे हैं? वृद्ध ने धीमे स्वर में कहा, (अखरोट का)। बादशाह ने हिसाब लगाया कि उसके बड़े होने और उस पर फल आने में कितना समय लगेगा। हिसाब लगाकर उसने आश्चर्य से वृद्ध की ओर देखा। फिर बोला, 'सुनो भाई, इस पौधे के बड़े होने और उस पर फल आने में कई साल लग जाएंगे, तब तक तो शायद तुम रहोगे भी नहीं?' वृद्ध ने बादशाह की ओर देखा।

वह बादशाह की दुविधा को भाँप गया। उसने बादशाह से कहा, 'आप सोच रहे होंगे कि मैं पागलपन का काम कर रहा हूँ। जिस चीज से आदमी को फायदा नहीं पहुँचता, उस पर कौन मेहनत करता है, लेकिन यह भी सोचिए कि इस बूढ़े ने दूसरों की मेहनत का कितना लाभ उठाया है। दूसरों के लगाए पेड़ों के कितने फल खाए हैं। क्या उस कर्ज को उतारने के लिए मुझे कुछ नहीं करना चाहिए? क्या मुझे इस भावना से पेड़ नहीं लगाने चाहिए कि उसके फल दूसरे लोग खा सकें? जो केवल अपने लाभ के लिए काम करता है, वह स्वार्थी होता है।' यह सुनकर बादशाह ने निश्चय किया कि वह प्रतिदिन एक पौधा लगाएगा।

प्रस्तुति-संजय शाण्डिल्य-आर्यसमाज हिरणमगरी, उदयपुर

एक दिन कहीं से गुजरते हुए एक फिल्मी गीत की दो पंक्तियाँ कानों में पड़ीं। बोल थे-'अपने लिए जिए तो क्या जिये,तू जी ऐ दिल जमाने के लिए'। विचार प्रवाह प्रारम्भ हो गया। एक सुनीति-दोहा स्मृत हुआ-

वृक्ष कबहुँ न फल भखै,नदी न संचे नीर। परमारथ के कारनै साधुन धरा शरीर।।

परमात्मा की सृष्टि का एक-एक कण परोपकार का सन्देश दे रहा है। वृक्ष के फल उसके अपने लिए नहीं हैं। नदी का कल-कल करता बहता जल किसी भी प्राणी की तृषा को दूर कर उसे तृप्त करता है। वर्षा-चक्र पर हम दृष्टि डालें,विचार करें वहाँ एक ही धारा दिखायी देती है वह है 'दे,सबके लिए दे'। पृथ्वी पर वर्षा जल गिरता है वह भूजल के रूप में संग्रहीत होता है और किसान के खेत तथा प्राणी मात्र की प्यास को दूर करता है अथवा नदी के रूप में सर्व सुलभ होता है। नदी भी उस जल को समुद्र को दे देती है। समुद्र-सूर्य की किरणों को, वहाँ से मेघ को और मेघ से पुनः धरती पर। इस प्रकार परोपकार का यह चक्र निरन्तर चलता रहता है। यह भी ध्यातव्य है कि जो किसी भी पदार्थ अथवा योग्यता को स्व-स्वत्व में बन्दी बनाकर रखने की चेष्टा करता है वह ऋषियों,विज्ञानवेत्ताओं और उन सभी मनीषियों व समाज का अपराधी तो है ही जिनके कारण वह अर्जन करने में सक्षम हुआ वरन् उसके बन्दीगृह में वह पदार्थ वा योग्यता सड़ जाती है। पोखर और नदी के पानी की तुलना कीजिये। जहाँ नदी का पानी स्वच्छ है, वहाँ पोखर का पानी सड़कर दुर्गन्ध फैलाता है और रोगकारक मच्छरों का आश्रय स्थल बन जाता है इसीलिए वेद आज्ञा देता है-

तन्तुं तन्वन् रजसो भानुमन्विही ज्योतिष्मतः पथो रक्ष धियाकृतान् ।अनुल्बण वयत जोगुवामपो मनुर्भव जनया दैव्यं जनम् ।।

भाव यह है कि - 'पूर्वजों से प्राप्त ज्ञान का संरक्षण कर और उसमें अपना योगदान अवश्य दे तभी तू मनुष्य कहलाने का अधिकारी है'।

अतिथि कब आओगे?

अशोक आर्य

स्पष्ट है कि सच्चे अर्थों में मानव कहलाने के लिए,मानव बनने के लिए केवल मनुष्य योनि में जन्म लेने से कार्य नहीं चलेगा वरन् मानवोचित उदात्त मूल्यों का समावेश जीवन में करना होगा। माता-पिता-आचार्य को पूर्ण प्रयास करने पड़ते हैं। प्रस्तुत आलेख में स्थानाभाव के कारण, इसकी विस्तृत विवेचना फिर कभी करेंगे । अतः यह निश्चिंत होकर कहा जा सकता है कि 'त्यागपूर्वक उपभोग' ही मनुष्य जीवन की धुरी है। वेद यही उपदेश करता है।

ईशावास्यमिदꣳ सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्। तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्।। यजु. ४०।१।।

जो इस सूत्र को जीवन में धारण करते हैं वे ही 'देव' हैं उन्हीं की सुगन्धि मृत्यु के पश्चात् भी प्रसरित होकर उन्हें अमर बना देती है। भगवान श्री राम ने १४ वर्ष का वनवास क्यों स्वीकार किया? पिता दशरथ ने तो स्वयं के मुख से कहा भी नहीं था। माता कैकेयी ने ही कहा था कि 'राम तुम्हारे पिता चाहते हैं कि तुम १४ वर्ष के लिए वन जाओ।' राम लोकप्रिय थे,जन-जन उन्हें राजा के रूप में देखना चाहता था,दूसरे दिन उनका राज्याभिषेक होने वाला था। वह चाहते तो कोई ताकत नहीं थी जो उन्हें सिंहासन पर आरूढ़ होने से रोक सके। पर उन्हें तो रक्ष-संस्कृति को विनष्ट कर आर्य-संस्कृति का उन्नयन करना था। संस्कृति-रक्षा के यज्ञ में अपने राजवैभव की बलि देने में उन्हें कष्ट का तनिक अनुभव नहीं हुआ।

भगवान श्री कृष्ण का जीवन देखें। किशोरावस्था से ही पीड़ित व दमित मानवता को आततायियों के अत्याचारों से मुक्त करने व धर्म साम्राज्य की स्थापना में संलग्न, इन महामना ने अपने जीवन में सुख की कितनी छाँव प्राप्त की ? विचार करें। १२५ वर्ष की वय तक उनका यह संघर्ष अनवरत् चलता रहा।

भगवान दयानन्द ने पीड़ित मानवता को बन्धन मुक्त करने के निमित्त अपने प्रयास न छोड़े । इसी क्रम में निज जीवन का बलिदान भी कर दिया। सारांश यह कि भारत का इतिहास ऐसे सर्वस्वदानियों से भरा पड़ा है जो भारतीय संस्कृति को प्रकाश स्तम्भ के रूप में विश्व के समक्ष स्थापित करती है। राजा रन्तिदेव ने भयंकर अकाल की स्थिति में सब कुछ दान करने के उपरांत जंगल की राह पकड़ ली। पत्नी व बालक सहित भूखा रहने पर भी भूख का कष्ट नहीं था। कष्ट था तो केवल एक –'आज का दिन बिना किसी अतिथि को भोजन कराए गया।' एक दिन संयोग से भोजन प्राप्त हुआ कि दो अतिथि और वह भी भूखे सम्मुख आ गये । सारा भोजन दे दिया पर अतिथि सेवा का सन्तोष कष्ट-निवारक बन गया। अतिथि सेवा (अतिथि यज्ञ) दैनिन्दिन था। उसमें व्यवधान कष्टकारी था। महाभारत में एक सोने के नेवले का कथानक आता है,जो समर्पण का महत्व सुन्दरता से स्थापित करता है।

घटना महाभारत काल की है। इन्द्रप्रस्थ में पाण्डवों का राजसूय यज्ञ सम्पन्न हो चुका था। इस महान् यज्ञ में पधारे हुए समस्त ऋषि-मुनि, राजा-महाराजा व अन्य अतिथिगण पूर्ण सन्तुष्टि के साथ प्रस्थान कर चुके थे। पाँचों पाण्डव भ्राता व श्री कृष्ण यज्ञ की सफलता की चर्चा में मग्न थे। पाण्डव इस बात से आत्म सन्तुष्ट थे कि इस राजसूय यज्ञ का फल उन्हें अवश्य प्राप्त होगा। पाण्डव-श्रीकृष्ण की यह बातचीत चल रही थी कि एक नेवला राजमहल के भण्डारगृह से बाहर निकला व धरती पर लौटने लगा। फिर वापस भण्डार गृह में चला गया। यह प्रक्रिया उसने कई बार दोहरायी। यह कोई साधारण नेवला नहीं था। इसका आधा शरीर तो स्वर्ण की भाँति जगमगा रहा था तथा शेष आधा शरीर साधारण नेवलों जैसा था। इस विलक्षण नेवले की विचित्र हरकतें देखकर पाण्डवों को बड़ा आश्चर्य हुआ। पाण्डवों के सबसे बड़े भाई धर्मराज युधिष्ठिर पशु-पक्षियों की भाषा समझने में प्रवीण थे। वे उठे व भण्डारगृह तक जाकर नेवले से बोले-हे नेवले यह तुम क्या कर रहे हो ? तुम्हें किस वस्तु की तलाश है? नेवले ने आदर भाव से युधिष्ठिर को प्रणाम किया व बोला-हे राजन! आपने जो महान् यज्ञ सम्पन्न किया है,उससे आपकी कीर्ति दसों दिशाओं में व्याप्त होगई है। इस यज्ञ से आपको जिस पुण्य की प्राप्ति होगी वह अनन्त ही होगी। मैं तो पूर्ण के इस अनन्त सागर में से एक छोटी सी बूँद अपने लिए ढूढ रहा हूँ। महाराज युधिष्ठिर ने नेवले को अपनी बात स्पष्ट करने को कहा तो नेवला बोला कि महाराज बहुत वर्ष पूर्व राज्य में भयानक अकाल पड़ा। लोग भूख व प्यास के मारे प्राण त्यागने लगे। चारों ओर त्राहि-त्राहि मची हुई थी। उस समय एक गाँव में चार सदस्यों का एक परिवार रहता था। परिवार का मुखिया उसकी पत्नी उसका पुत्र तथा पुत्रवधू बेचारे अत्यन्त दीन हीन थे। अकाल के कारण उस परिवार में आये दिन भूखों मरने की नौबत आने लगी। एक बार मुखिया व उसके बेटे को कई दिन तक कोई काम नहीं मिला । घर में खाने को कुछ नहीं था। पूरा परिवार कई दिन से भूखा था।

परिवार के मुखिया से अपने परिवार को भूख से तड़पता नहीं देखा गया। वह भोजन की तलाश में घर से निकला। काफी प्रयत्नों के बाद उसे थोड़ा सा आटे का चौकर प्राप्त हो सका। उसकी पत्नी ने उसी चौकर की चार रोटियाँ बनाईं। वह मिल बाँटकर रोटी खाने बैठे ही थे कि उनके घर के द्वार पर एक अतिथि आया जो भूख के कारण बिलबिला रहा था। मुखिया आदरपूर्वक उसे घर के अंदर तो ले आया। परन्तु उसकी भूख किस प्रकार से मिटाई जाये यह यक्ष प्रश्न उसके समक्ष उपस्थित हो गया। कारण कि वह स्वयं और परिवार के सदस्य भी कई दिन से भूखे थे। अन्त में उसने स्वयं भूखा रहकर अतिथि को भोजन करवाना अपना धर्म समझा। यह सोचकर उसने अपने हिस्से की रोटी अतिथि को दे दी। परन्तु इससे उसकी भूख नहीं मिटी। तो एक-एक करके घर के चारों व्यक्तियों की रोटी उस अतिथि को दे दी गई। तब वह अतिथि बड़े तृप्त भाव से संपूर्ण परिवार को आशीर्वाद देता हुआ चला गया। इधर भूख के कारण उस परिवार के सदस्यों की हालत बिगड़ने लगी और एक-एक कर उन सभी ने प्राण त्याग दिये।

नेवले ने आगे कहना शुरू किया- उस समय वह स्वयं भी भूख के कारण अत्यन्त व्याकुल हो रहा था व भोजन की तलाश में उस घर में जा पहुँचा। वहाँ चारों प्राणी मृत पड़े थे। भोजन ढूढता हुआ मैं उस घर के चूल्हे तक पहुँचा। जब कुछ नहीं मिला तो थकान के कारण मैं वहीं सो गया। नींद खुलने के बाद जब मैं चलने लगा तो यह देखकर आश्चर्यचकित रह गया कि मेरा

आधा शरीर सोने का हो गया था। मैं समझ नहीं पा रहा था कि यह सब कैसे हो गया? जब अपनी पूरी आपबीती सुनाकर मैंने एक महात्मा से जिज्ञासा प्रकट की तो उन्होंने इस प्रकार समाधान किया कि जिस जगह चूल्हे के पास तुम लेटे हुए थे उस स्थान पर उस चौकर का थोड़ा सा अंश बिखरा हुआ था जिससे मुखिया की स्त्री ने अपने परिवार के लिए चार रोटियाँ बनाई थीं। यह चमत्कारिक चौकर तुम्हारे शरीर के जिस जिस भाग पर लगा वह भाग स्वर्णिम हो गया।

ऋषि ने आगे कहा-उस परिवार तथा उसके मुखिया ने अतिथि यज्ञ के हेतु से अपने प्राणों का बलिदान दिया। वे स्वयं भूखे रहे परन्तु घर आये अतिथि का सत्कार किया। यही कारण है कि उसके बचे हुए अन्न में इतना प्रभाव उत्पन्न हो गया कि उसके स्पर्श मात्र से तुम्हारा आधा शरीर सोने का हो गया। भविष्य में यदि कोई व्यक्ति उस परिवार की भाँति ही धर्म निभायेगा तो उसके बचे हुए अन्न के प्रभाव से तुम्हारा शेष शरीर भी स्वर्णिम हो जायेगा। यह कहानी सुनाकर नेवले ने महाराज युधिष्ठिर को सम्बोधित करते हुए कहा कि हे राजन् ! जब मैंने आपके विराट राजसूय यज्ञ के बारे में सुना तो सोचा आपने इस यज्ञ में अपार सम्पदा निर्धनों को दान की है और लाखों भूखों को भोजन करवाया है। अतः आपने जो अपरम्पार पुण्य कमाया है, संभवतः उसके प्रताप से मेरा शेष आधा शरीर भी सोने का हो जाए। यह सोचकर मैं बार-बार भण्डारगृह के भीतर जाकर व बाहर आकर धरती पर लौट रहा था कि यज्ञ से बचे अन्न के स्पर्श से मैं पूर्णरूपेण स्वर्णिम शरीर प्राप्त कर लूँ किन्तु मेरा शरीर तो पूर्व की ही भाँति है। इतना कहकर नेवला मौन हो गया। महाराज युधिष्ठिर ने जब यह संपूर्ण वृतान्त सभी को बताया तो वे सोच में पड़ गये कि क्या हमारे विराट यज्ञ का पुण्य इतना भी नहीं है कि यह नेवला अपने शेष आधे शरीर को स्वर्ण का बना सके। क्या उस परिवार का पुण्य हमारे इस विधान से सम्पन्न किए विशाल यज्ञ से भी अधिक है? श्री कृष्ण जी ने जब पाण्डवों को इस प्रकार चिन्तामग्न देखा तो कहा-बन्धु यह सत्य है कि आपका यज्ञ अपने में अद्वितीय था। आपने निर्धनों को जी खोलकर दान दिया और असंख्य भूखे व्यक्तियों की भूख शान्त की किन्तु निःसंदेह उस परिवार का दान आपके यज्ञ से बहुत बड़ा था क्योंकि उन लोगों ने उस स्थिति में दान दिया जब उनके पास कुछ नहीं था। अपने प्राणों को संकट में डालकर भी उस परिवार ने अपने पास उस समय उनके प्राणों की रक्षा करने वाली सर्वाधिक महत्वपूर्ण भोज्य सामग्री अतिथि-सेवा में अर्पित कर दी। अतःआपका यह दान उस परिवार के अमूल्य दान की तुलना में पासंग भर भी नहीं है।

परोपकार की भावना से परिपूरित जीवन ही वास्तव में जीवन है। यही जीने की कला है। महात्मा आनन्द स्वामी ने एक बड़ा ही रोचक पर प्रेरणास्पद प्रसंग कहा है।

एक चेला था । उसने अपने गुरु से पूछा -'महाराज! संसार में रहने का क्या ढंग है?'
गुरु ने कहा-'अच्छा प्रश्न किया है तूने। एक दो दिन में उत्तर देंगे।'

दूसरे दिन गुरुजी के पास एक व्यक्ति कुछ फल और मिठाइयाँ लेकर आया। सब वस्तुएँ महात्मा जी ने सामने रखकर उन्हें प्रणाम किया और उनके पास बैठ गया। महात्मा जी ने उस व्यक्ति से बात भी नहीं की। पीठ मोड़ी, सब के सब फल खा लिये। मिठाई भी खा ली। वह व्यक्ति सोचता रहा-यह विचित्र साधु है वस्तुएँ तो सब खा गया,परन्तु मैं जो सब कुछ लाया हूँ,मेरी ओर देखता भी नहीं।'

अन्त में क्रुद्ध होकर उठा,चला गया। उसके जाने के पश्चात् महात्मा ने चेले से पूछा-क्यों भाई, क्या कहता था वह व्यक्ति?'
शिष्य ने कहा-'महाराज! वह तो बहुत क्रुद्ध था। कहता था-मेरी वस्तुएँ तो खालीं,मुझसे बोले भी नहीं!'
महात्मा बोले- ' तो सुन! संसार में रहने का यह ढंग सही नहीं। कोई दूसरा ढंग चाहिए।'
थोड़ी देर के पश्चात् एक दूसरा व्यक्ति आया। वह भी फल और मिठाइयाँ ले आया। फल और मिठाइयों को साधु के सामने रखकर बैठ गया। साधु ने फल और मिठाइयों को उठाया,साथ वाली गली में फेंक दिया और उस व्यक्ति से बड़े प्यार और सम्मान के साथ बातें करने लगा- 'कहो जी,क्या हाल है? परिवार तो अच्छा है? कारोबार तो अच्छा है? बच्चे ठीक हैं? पढ़ते हैं न? बहुत अच्छा करते हो, उन्हें खूब पढ़ाओ! तुम्हारा अपना शरीर तो ठीक है? मन तो प्रसन्न रहता है? भगवान् का भजन तो करते हो? शरीर अच्छा हो, चित्त प्रसन्न हो और प्रभु भजन में मन लगे तो फिर मनुष्य को चाहिए ही क्या? इस प्रकार की मीठी मीठी बातें करता रहा और वह व्यक्ति मन-ही-मन कुढ़ता रहा-यह विचित्र साधु है! मुझसे तो मीठी बातें करता है, मेरी वस्तुओं का इसने अपमान कर दिया, इस प्रकार फेंक दिया, जैसे उनमें विष पड़ा हो।'

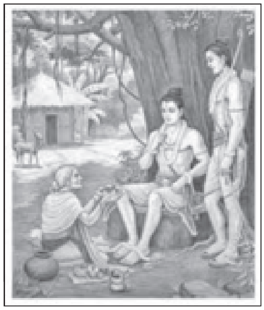

वह भी चला गया तो महात्मा ने चेले से पूछा-क्यों भई, यह तो प्रसन्न हो गया?
शिष्य ने कहा-'नहीं महाराज! यह तो पहले से भी अधिक क्रुद्ध था।
कहता था-मेरी वस्तुओं का अपमान कर दिया।'
महात्मा बोले-' तो सुन भाई संसार में रहने का यह ढंग भी ठीक नहीं। अब कोई और विधि सोचनी होगी।'
तभी एक सज्जन वहाँ आए। वे भी फल और मिठाई लाये। साधु के समक्ष रखकर बैठ गए। साधु ने बहुत प्यार से उसके साथ बात की। उन वस्तुओं को आसपास बैठे लोगों में बाँटा। कुछ मिठाई उस व्यक्ति को भी दी,कुछ स्वयं भी खाई। उसके घर बार और परिवार की बातें करते रहे। उसे सुन्दर कथाएँ सुनाते रहे । जब वह भी गया,तो महात्मा ने पूछा- 'क्यों भाई! यह व्यक्ति क्या कहता था? '

शिष्य ने कहा-'यह तो बहुत प्रसन्न था महाराज! आपकी बहुत प्रशंसा करता था।कहता था-ऐसे साधु को मिलकर चित्त प्रसन्न हो गया।'
महात्मा बोले- 'तो सुन बेटे! संसार में रहने का सही ढंग यही है।'

संसार में रहने का ठीक ढंग यह है कि प्रभु ने जो कुछ दिया है, उसे बाँटकर खा, त्याग-भाव से भोग और इसके साथ ही साथ भगवान से प्यार भी कर। उससे बातें कर। उसके नाम का जप कर । उसका ध्यान कर।

वस्तुतः मनुष्य जीवन 'मैं' से 'पर' तक की यात्रा है। आप एक छोटे बालक को देखें। वह 'मैं' से ओतप्रोत है। वह अपने ही नहीं दूसरों के खिलौनों पर अपना हक जमाता है। उसे 'सम्बन्ध' भी बाँटने मंजूर नहीं हैं। पिता गोद में अन्य बालक को ले यह उसे सह्य नहीं है। कुछ बड़ा होकर जब अन्य साथियों के सम्पर्क में आता है तो मद्धम गति से 'पर' की ओर उसकी यात्रा प्रारम्भ होती है। जब वही गृहस्थ में प्रवेश करता है तो यह गति तीव्र व सुदृढ़ होती है। पत्नी, बच्चे, पूरे परिवार का योगक्षेम उसकी प्राथमिकता बन जाता है । उसका यह परिवार ग्राम मोहल्ले नगर तक तब विस्तृत हो जाता है जब वह वानप्रस्थ हो जाता है। और संन्यासी के रूप में वह परिव्राट होकर केवल विश्व मानवता के लिए जीता है।

अतएव प्रत्येक गृहस्थ के लिए पाँच यज्ञों का विधान किया गया है। ये नैत्यिक हैं। इसमें किसी भी प्रकार का प्रमाद प्रशस्त नहीं है। ये यज्ञ ही मनुष्य की 'मैं' से 'पर' तक की यात्रा को रेखांकित करते हुए उसे सम्पूर्ण 'परत्व' की प्राप्ति कराते हैं। इसीलिये इन यज्ञों को महायज्ञ के नाम से प्रतिष्ठित किया गया है। प्रत्येक मनुष्य को न केवल मनुष्यों के वरन् मानवेतर प्राणियों के योगक्षेम का प्रबन्ध करना अनिवार्य है। अतः आवश्यक है कि इस कर्तव्य को बिना व्यवधान के किया जावे। महर्षि दयानन्द ने इस निमित्त उक्त महायज्ञों के अन्तर्गत आने वाले वैश्वदेव यज्ञ तथा अतिथि यज्ञ का भी विधान किया है। मूल भावना वही है कि हम पदार्थों का केवल स्वयं के लिए उपभोग न कर, उसे समष्टि हित में समर्पित करें। वेद में तो कहा है 'केवलाघो भवति केवलाधी'- जो अकेला खाता है वह पाप खाता है' अतः गृहस्थ की रसोई में जो कुछ भी बनता है उसे स्वयं ग्रहण करने से पूर्व पाकाग्नि में होम कर समष्टि तक पहुँचाए {द्रव्य को दूर-दूर तक पहुँचाने का सर्वश्रेष्ठ माध्यम अग्निहोत्र है} बलि के भाग कर अतिथि को जिमाए और अतिथि-यज्ञ संपन्न करे।
छः भाग कुत्ते, चींटी आदि मानवेतर योनियों के निमित्त निकाले और बलिवैश्वदेव यज्ञ नित्य करे।
यहाँ अतिथि यज्ञ की ही विशेष चर्चा अपेक्षित है। अब प्रश्न उठता है कि अतिथि कौन है?
अतिथि कौन- महर्षिवर सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में लिखते हैं-

'अतिथि उसको कहते हैं कि जिसकी कोई तिथि निश्चित न हो अर्थात् अकस्मात् धार्मिक, सत्योपदेशक, सबके उपकारार्थ सर्वत्र घूमने वाला, पूर्ण विद्वान् ,परम योगी,संन्यासी गृहस्थ के यहाँ आवे तो उसको प्रथम पाद्य, अर्घ और आचमनीय तीन प्रकार का जल देकर पश्चात् आसन पर सत्कार पूर्वक बिठालकर खान-पान आदि उत्तमोत्तम पदार्थों से सेवा सुश्रूषा करके उनको प्रसन्न करे। पश्चात् सत्संग कर उनसे ज्ञान-विज्ञान आदि जिनसे धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष की प्राप्ति होवे ऐसे-ऐसे उपदेशों का श्रवण करे और अपना चाल-चलन भी उनके सदुपदेशानुसार रक्खे। (सत्यार्थ प्रकाश पृ.१०२)

उत्तम विद्वान्, धर्मात्मा ब्राह्मण, समदर्शी, पक्षपातरहित योगी, अयोगी, आर्द्रचित्त, सुशील, सत्यवादी, परोपकार प्रिय, पुरुषार्थी, उदार, विद्या-धर्म की उन्नति करने हारे, निन्दा-स्तुति में हर्ष-शोक रहित, निर्भय, उत्साही, योगी ज्ञानी सृष्टि-क्रम, वेदाज्ञा, ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभावानुकूल वर्तमान करने हारे, सत्यशास्त्रों के पढ़ने हारे ,सत्योपदेशक, प्रश्नों के यथार्थ समाधानकर्त्ता, अपने आत्मा के तुल्य अन्य का भी सुख-दुःख, हानि-लाभ समझने वाले, अपमान को अमृत के समान और मान को विष के समान समझने वाले, सन्तोषी (जो कोई प्रीति से जितना दे, उतने ही से प्रसन्न होने वाले) उत्तम अतिथि होते हैं।

वेद में कहा है- **मार्ज्याल्यो मृज्यते स्वे दमूनाः कविप्रशस्तो अतिथिः शिवो नः।**
सहस्रश्रृंगो वृषभस्तदोजा वृश्वां अग्ने सहसा प्रास्यन्यान् ।। ऋग्वेद ५.१.८.

वे ही अतिथि हो सकते हैं, जो मन को वश में रखने वाले, मंगल आचरण वाले,धार्मिक, विद्वान् , जितेन्द्रिय और सबके प्रिय कार्य को सिद्ध करने में रुचि रखने वाले हों। जैसे अग्नि सबको शुद्ध करने वाला है वैसे ही अतिथि सब संसार को पवित्र करने वाले होते हैं।

अतिथि होने के अयोग्य- दान देने से पूर्व दानदाता सुपात्र है या कुपात्र इसे जानना भी अत्यंत आवश्यक है। क्योंकि सुपात्र को दिया हुआ दान जहाँ दानदाता, दानाग्रहीता व समाज की उन्नति का कारक है वहीं कुपात्र को दिया हुआ दान इसके ठीक विपरीत प्रभाव उत्पन्न करता है।

मनु ने कहा है- **यथा प्लवेनौपलेन निमज्जत्युदके तरन्।**
तथा निमज्जतोऽधस्तादज्ञौ दातृप्रतीच्छकौ ।। मनु. ४. १९४

जैसे पत्थर की नौका में बैठके जल में तैरने वाला डूब जाता है, वैसे अज्ञानी दाता और ग्रहीता दोनों अधोगति अर्थात् दुःख को प्राप्त होते हैं। अतएव सुपात्र व कुपात्र का चयन आवश्यक है।
काम, क्रोध, लोभ, मोह से युक्त, परहानि करने वाले, मिथ्यावादी, बारम्बार माँगने की प्रवृत्ति रखने वाले, असंतोषी, जिसकी अनेक बार सेवा की हो पर कभी एक बार न करने पर शत्रु बन जावे ऐसा, ऊपर साधु का वेश पर काम लोगों को बहकाना वा ठगना,अपने पास पदार्थ होने पर भी कहना कि मेरे पास कुछ नहीं है,रात दिन भीख माँगने वाले, मादक द्रव्यों का सेवन करने वाले ये सब कुपात्र हैं। महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में लिखते हैं- वेद-निंदक, वेद-विरुद्ध आचरण करने वाले, मिथ्याभाषणादियुक्त, जैसे विडाला छिप और स्थिर रहकर ताकता-ताकता झपट से मूषे आदि प्राणियों को मार अपना पेट भरता है वैसे बैडालवृत्तिक, हठी, दुराग्रही, अभिमानी, आप जानें नहीं औरों का कहा मानें नहीं, कुतर्की, व्यर्थ बकने वाले, बकवृत्ति वाले। ऐसों का सत्कार वाणी मात्र से भी न करना चाहिए, क्योंकि इनका सत्कार करने से ये वृद्धि को पाकर संसार को अधर्मयुक्त करते हैं। (सत्यार्थप्रकाश, पृ.९२,)

अतिथि यज्ञ का फल -
वेद में कहा है- **ओं तं वो दीर्घायुशोचिष गिरा हुवे मघोनाम।**
अरिष्टो येषां रथो व्यश्वदावन्नीयते ।। ऋग्वेद ५.१८.३

जो अहिंसा आदि धर्मों के पालनकर्ता मनुष्य दीर्घायु, धार्मिक अतिथियों की सेवा करते हैं, वे दीर्घायु और धनवान होकर आनंदित रहते हैं । ऋषि लिखते हैं -जब तक उत्तम अतिथि जगत् में नहीं होते, तब तक उन्नति भी नहीं होती । उनके सब देशों में घूमने और सत्योपदेश करने से पाखण्ड की वृद्धि नहीं होती और सर्वत्र गृहस्थों को सहज से सत्य विज्ञान की प्राप्ति होती रहती है और मनुष्य मात्र में एक ही धर्म स्थिर रहता है । बिना अतिथियों के संदेह की निवृत्ति नहीं होती । संदेहनिवृत्ति के विना दृढ़ निश्चय भी नहीं होता, निश्चय के बिना सुख कहाँ।(सत्यार्थ प्रकाश) जीवन के उच्चतम आदर्श को प्राप्त करने हेतु भारतीय मनीषियों ने जो योजना बनाई उसमें मनुष्य के जीवन को चार आश्रमों में वर्गीकृत किया है। इसमें धनार्जन मुख्यतः गृहस्थ का ही कार्य है। अतएव इस दृष्टि से अन्य तीनों आश्रमियों के योगक्षेम का दायित्व गृहस्थ पर ही है।

महर्षि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' के चतुर्थ समुल्लास में महर्षि मनु को उद्धृत कर लिखा है-

यथा वायुं समाश्रित्य वर्तन्ते सर्वजन्तवः ।
तथा गृहस्थमाश्रित्य वर्तन्ते सर्व आश्रमाः ।। मनु. ३/७७

जैसे वायु के आश्रय से सब जीवों का वर्तमान सिद्ध होता है, वैसे ही गृहस्थ के आश्रय से ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ और संन्यासी अर्थात् सब आश्रमों का निर्वाह होता है ।

इसीलिए भारतीय मनीषा ने अतिथि यज्ञ को नैत्यिक बनाते हुए पञ्च महायज्ञों में परिगणित किया है ।

सत्यार्थ प्रकाश की प्रूफ रीडिंग में महर्षि की सतर्कता -
इसी प्रकरण में- इन बलि भागों का क्या करें? ऋषि ने दो व्यवस्थाएँ दी हैं -
१.अगर कोई अतिथि हो तो उसे जिमा दें, खिला दें।
२.अग्नि में छोड़ देवें।

इस प्रकरण के अंतर्गत पांडुलिपि में लिपिकर की अनवधानता से 'पश्चात् थाली में वा भूमि में...' ऐसा लिखा है। परन्तु ये बलि के भाग अतिथि को जिमाने के निमित्त हैं। अतः महर्षिवर ने, इन भागों को निकालकर किस वस्तु पर रखा जावे, इस पर भी ध्यान दिया है ताकि वे भाग अतिथि को खिलाने योग्य रहें। महर्षि ने प्रूफ-रीडिंग के समय वाक्य को शुद्ध कर दिया। ऋषि लिखते हैं ......'पश्चात् थाली अथवा भूमि में पत्ता रखके पूर्व दिशादि क्रमानुसार यथाक्रम इन मन्त्रों से भाग रक्खे'। (सत्यार्थ प्रकाश पृ.१०२ पं १-३)। स्पष्ट है कि ये भाग या तो थाली में रखें अथवा भूमि में पत्ता रखकर रखें ताकि धूल मिट्टी से प्रदूषित न हो, अतिथि के खाने योग्य रहें। प्रूफ रीडिंग में ऋषि की यह सतर्कता प्रणम्य है।

ध्यान रहे! संस्कार विधि पृ.१६१ (आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट-२००२)में भी-'इन मन्त्रों से एक पत्तल वा थाली में यथोक्त दिशाओं में भाग रखना' उपलब्ध है।

परोपकारार्थ सतां विभूतयः

जिला आर्य समाज के प्रधान श्री अर्जुनदेव चढ्डा एवं उनके साथी अरविन्द पाण्डेय आदि एवं पंजाबी समाज के सदस्यों ने सर्द हवाओं एवं कडकड़ाती सर्दी में फुटपाट पर सो रहे लोगों को कम्बल प्रदान किये।

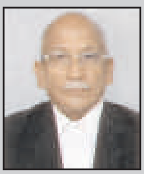

श्री योगेश्वर स्वरूप भटनागर

श्री हेमेन्द्र विजयवर्गीय

आर्य समाज बारां के नवीन निर्वाचनों में श्री योगेश्वर स्वरूप भटनागर को सर्व सम्मति से प्रधान, श्री हेमेन्द्र विजयवर्गीय को मंत्री एवं श्री श्याम सरोया को कोषाध्यक्ष पद पर निर्वाचित किया गया।

- मंत्री, आर्य समाज बारां

क्या आप जानते हो ?

१. लम्बे-लम्बे नाखून बढ़ाना और उन पर नेल पालिश लगाना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

२. स्टोव या गैस की नंगी लौ पर कोई भी चीज भूनकर या सेककर खाना हानिकारक है।

३. चाय की पत्ती को बार-बार उबाल कर पीने से दाँत और आँत दोनों खराब व कमजोर होते हैं।

४. धूम्रपान और मद्यपान करना अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मारना है। देखो! बच्चे तुम्हारी नकल करके बिगड़ रहे हैं।

५. माँस, मछली, अण्डा मनुष्य का सही भोजन नहीं है। इनके खाने से शरीर में अनेक प्रकार के भयंकर रोग लग जाते हैं। शाकाहारी भोजन ही हितकारी, गुणकारी है।

- देवराज आर्यमित्र, नई दिल्ली-६४

प्रतिस्वर

भाई अशोक जी, सत्यार्थ-सन्देश पत्रिका प्राप्त हुई। कागज, छपाई, विषयों का चयन और प्रस्तुति अत्युत्तम है। आर्य जगत् की यह पहली ऐसी पत्रिका है। मैं मुधर-लोक में भी इसके बारे में लिखूँगा।

-मधुर प्रकाश
सम्पादक-मधुर-लोक, दिल्ली

श्री ओमप्रकाश वर्मा

श्री कमलेश आर्य

आर्य समाज किशनपोल बाजार-जयपुर के नवीन निर्वाचनों में श्री ओमप्रकाश वर्मा जी को सर्व सम्मति से प्रधान, श्री कमलेश शर्मा को मंत्री एवं श्री रमेश चन्द्र शर्मा को कोषाध्यक्ष पद पर निर्वाचित किया गया। हमें विश्वास है कि श्री ओ.पी. वर्मा जी के नेतृत्व में आर्य समाज की गतिविधियाँ सुचारु रूप से चलती रहेंगी। नवनिर्वाचित अधिकारियों को सत्यार्थ-सन्देश परिवार की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

डा. सोमदेव शास्त्री होंगे सम्मानित

पाणिनी महाविद्यालय रेवली, सोनीपत, हरियाणा, के वार्षिकोत्सव के अवसर पर ११ मार्च २०१२ को प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डॉ. सोमदेव जी शास्त्री का सम्मान किया जावेगा

डॉ. भारतीय जी का सम्मान हुआ

राजस्थान साहित्य अकादमी में साहित्य के क्षेत्र में विशिष्ठ योगदान देने के उपलक्ष्य में प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डॉ. भवानी लाल भारतीय जी का सम्मान किया। उदयपुर में दिनांक २८.०१.२०१२ को एक समारोह में राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोक जी गहलोत द्वारा यह सम्मान किया गया। डॉ. भारतीय आर्य जगत् की विशिष्ठ विभूति हैं। इस सम्मान से आर्य जगत् गौरवान्वित है। आपके निरामय दीर्घायुष्य के लिये परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं। प्रभु करे आपकी लेखनी इसी प्रकार मानवता की सेवा करती रहे।

न्यास द्वारा वेद सम्मलेन का आयोजन

२७, २८ व २९ अप्रैल को न्यास के तत्वावधान में मानव विकास संसाधन मंत्रालय के सौजन्य से वेद सम्मलेन का आयोजन किया जा रहा है । मंत्रालय के सम्बंधित प्रकोष्ठ के सचिव डा. रूप किशोर शास्त्री की प्रेरणा से यह कार्यक्रम होगा । कार्यक्रम की विस्तृत सूचना यथा समय दी जावेगी ।

प्रतिस्वर

आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में सत्यार्थ-सन्देश का प्रवेशांक देखा। देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। यह पत्रिका आर्य जगत् में अपना कीर्तिमान स्थापित करेगी ऐसी आशा बंधी। पत्रिका की साज-सज्जा, छपाई, सफाई आकर्षक होने के साथ चयनित विषय-वस्तु पठनीय एवं संग्रहणीय है।

रामचंद्र कुमार
१६-१-७६७ दूध बावली, हैदराबाद

सत्यार्थ संदेश का जनवरी २०१२ (प्रवेशांक) प्राप्त करके अभिभूत हुआ। आप दिव्य पत्रिका 'सत्यार्थ संदेश' के माध्यम से महर्षि दयानन्द के तमाम विचारों एवं संदेशों को घर घर पहुँचाने का अत्यन्त कल्याणकारी एवं उपयोगी कार्य कर रहे हैं। आज जबकि देश में भ्रष्टाचार घोटालों, झूठ, अत्याचार, बेईमानी एवं सांस्कृतिक प्रदूषण का चहुँदिशि बोलबाला है, कलियुग अपने चरम पर है, सत्यार्थ-संदेश के शुभ संदेशों की उपादेयता एवं महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है।

हर काम को आसान बना सकते हैं, खुशहाली का सामान बना सकते हैं।

सत्यार्थ के संदेश को समझने वाले निज जीवन वरदान बना सकते हैं।।

डॉ.मिर्जा हसन नासिर
जी-०२ लोपरपुर रेजीडेन्सी डॉ.बेजनाथ रोड न्यू हैदराबाद लखनऊ २२६००७

डॉ. ज्वलन्त कुमार को वेद-वेदाङ्ग पुरस्कार

विश्वप्रसिद्ध विद्वान् डॉ. ज्वलन्त कुमार को आर्य समाज सान्ताक्रुज, मुम्बई की ओर से अत्यन्त प्रतिष्ठित 'वेद-वेदाङ्ग पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। डॉ. ज्वलन्त जी को सत्यार्थ-सन्देश परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

न्यास द्वारा वैदिक संस्कृति प्रशिक्षण शिविर का द्वितीय स्तर का शिविर ५ जून से ९ जून तक आयोजित किया जा रहा है।

ध्यातव्य है कि न्यास द्वारा गत कई वर्षों से प्रथम स्तर का शिविर लगाया जाता है, जिसमें छात्र-छात्राओं की उपस्थिति १०० से ऊपर होती रही है। शिविर में मुख्यतः यही विषय रहता है कि सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं पर चलकर किस प्रकार विद्यार्थी अपने जीवन का निर्माण कर सकते हैं। शिविर संयोजक श्री सुरेश मित्तल (फतहनगर) ने बताया कि गत शिविरों में भाग लेने वाले प्रतिभागियों में से चुनिन्दा को ही इस द्वितीय स्तर के शिविर में भाग लेने हेतु चयनित किया जावेगा ।
अधिकतम संख्या २५ की रहेगी । बालिकाओं का शिविर पृथक् से लगाया जावेगा। जिन छात्रों ने न्यास के शिविरों के अतिरिक्त भी आर्य समाज के शिविरों में भाग लिया है वे भी अनुमति लेने हेतु १ मई से पूर्व आवेदन कर सकते हैं । यह पूर्णतः निःशुल्क आवासीय शिविर होगा ।

हलचल

तंबाकू उत्पाद को प्रमोट करना अब महंगा पड़ सकता है।

ऐसा करने वालों को दो से पाँच साल तक जेल की हवा खानी पड़ सकती है। वहीं पाँच हजार रुपये तक जुर्माना भी भरना पड़ेगा। स्वास्थ्य विभाग ने कोपटा एक्ट-२००३ को सुचारु रूप से लागू करने के लिए पुख्ता प्रबंध किए हैं। इसके लिए सभी जिला के एमओएच को पत्र लिखकर इस एक्ट को सख्ती के साथ लागू करने के निर्देश दिए गए हैं।

इधर, स्वास्थ्य विभाग ने साफ कर दिया है कि धूम्रपान करने वाले व्यक्ति को जहाँ २०० रुपये जुर्माना किया जाएगा। वहीं अनुच्छेद २२ के तहत तंबाकू उत्पाद को प्रमोट करने पर पहली दफा दो साल की सजा और एक हजार जुर्माने का प्रावधान है। दूसरी दफा दोषी पाए जाने पर पाँच साल की सजा और पाँच हजार जुर्माना वसूला जाएगा। यह दोनों सजाऐं एक साथ भी हो सकती हैं।

परोपकार करने से मन-मस्तिष्क अधिक स्वस्थ होते हैं-आयु बढ़ती है।

केलीफोर्निया विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एक शोध में पाया कि निःस्वार्थ भाव से दूसरों की सहायता करने से हमारा मस्तिष्क अच्छा अनुभव करता है और हमारे स्वास्थ्य पर इसका सकारात्मक प्रभाव पडता है। शोध में पाया गया कि किसी की मदद करने से मस्तिष्क का वेंट्रल स्ट्रेटम नामक भाग सक्रिय होता है, जिससे डोपामाइन नामक रसायन निकलता है । यह रसायन दिमाग को संतुलित रखने तथा ख़ुशी अनुभव कराने का काम करता है । इससे हमारे दिमाग में रक्त संचार बढ़ जाता है । शोध में पाया गया है कि अपने निकटस्थ लोगों को सहयोग देने से आयु बढ़ जाती है । यह गुण हमारे जींस के माध्यम से हमारे वंशजों को भी मिल जाता है ।

गुद्‌गुदाओ नहीं तो सांस लेना भूल जाएगा

ब्रिटेन में एक साल के बेन को अनोखी बीमारी है। बेन का जन्म समय पूर्व हुआ था। आम तौर पर माँ अपने बच्चे को हँसाने और प्रसन्न करने के लिए उन्हें गुदगुदाती हैं। पर बेन का जन्म एक अजीबोगरीब बीमारी के साथ हुआ है। बीमा यह है कि जब उसकी साँसें रुकती हैं , तो उसे वापस चलाने के लिए गुदगुदाना पडता है। एक साल का बेन हर रात सोते समय कई बार अपनी साँसों को खो देता है। ऐसे में उसकी माँ संचिया नौरिस गुदगुदाना प्राम्भ करतीं हैं। बेन की साँसों के रुकने का पता एक विशेष प्रकार के अलार्म से चलता है। जैसे ही अलार्म बजता है सांचिया उसे गुदगुदाने लगती हैं। सांचिया बताती हैं कि एक रात तो बेन की साँसें १२ बार रुकीं और हर बार उसे गुदगुदाना पड़ा। साभार-भास्कर

विद्वान् एवं विदुषियों का सम्मान

गुरुकुल आमसेना के ४४वें महोत्सव पर दिनाङ्क ११ से १३ फरवरी २०१२ में प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् एवं लेखक पंडित राजवीर शास्त्री, इं. प्रियव्रत दास जी एवं माता प्रेमलता शास्त्री को स्मृति चिह्न, शाल, श्रीफल एवं पन्द्रह हजार रुपयों की राशि एवं अभिनन्दन पत्र देकर 'परममित्र मानव निर्माण' की ओर से सम्मानित किया गया।

गुरुकुल झज्जर के ६७वें वार्षिक महोत्सव पर **प्रो. राजेन्द्र** जिज्ञासु, आचार्य वेदव्रत जी एवं श्री राम निवास को स्वामी ओमानन्द सरस्वती जी की स्मृति में १५-१५ हजार रुपये, शाल तथा प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया जायेगा -आचार्य विजयपाल

तृतीय आर्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन दिल्ली में ८ अप्रैल २०१२

गुण-कर्म-स्वभाव के आधार पर एक दूसरे का चयन कर जो 'स्त्री-पुरुष' वैवाहिक सूत्र में आबद्ध होते हैं वह गृहस्थ प्रसन्नता से ओत-प्रोत रहता है। इस सोच से आ.प्र.सभा दिल्ली द्वारा उक्त सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। इच्छुक जन २० मार्च तक अपना पंजीकरण करा सकते हैं। फार्म हेतु न्यास से सम्पर्क करें।

सम्पर्क सूत्र ९३१४५३५३७९

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थ प्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित

सत्यार्थ प्रकाश (मानक संस्करण) **अवश्य खरीदें।**

प्राप्ति स्थल : श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर - ३१३००१

- अधिकारी वर्ग से विशेष निवेदन-कृपया अपनी संस्था को 'सत्यार्थ-सन्देश' परिवार से अवश्य जोड़े।
- विद्वानों से निवेदन है कि वे केवल सत्यार्थ-सन्देश के लिये लिखे गये अपने संक्षिप्त, सारगर्भित लेख प्रेषित करने की कृपा करें।

आत्मनिरीक्षण

मनुष्य यदि अपने जीवन को दिव्य,श्रेष्ठ,आदर्श, महान् बनाना चाहता है तो नित्य सोने से पूर्व आत्म निरीक्षण करे,अपने अन्तःकरण में झाँके कि दिन भर मैंने क्या-क्या त्रुटियाँ-दोष-भूलें की हैं। विचारें 'क्या किया जो नहीं करना चाहिए था और क्या नहीं किया जो करना चाहिये था'। त्रुटियों को पकड़ें,प्रायश्चित करें,स्वयं दण्ड लें और भविष्य में न करने का प्रयत्न करें। कोई व्यक्ति बाहरी तौर से कितना ही धन से,बल से,कपड़ों से साफ सुथरा सभ्य और सबल हो,परन्तु अन्तःकरण से मलिन, कमजोर, खिन्न व दुःखी होगा तो वह गिर जायेगा। बाह्य दुःख के बजाय मानसिक शोक-दुःख पीड़ा-काम,क्रोध,लोभ,मोह से व्यक्ति अधिक दुःखी रहता है। आज चिन्तन की शैली उलटी है। व्यक्ति अन्य के दोष तो देखता है परन्तु स्वयं के नहीं। चाहे कोई कितना ही पढ़ लिख जाये,परन्तु जब तक कथनी-करनी एक न होगी तब तक ऋषियों का जमाना धरती पर नहीं उतारा जा सकता।

अपने आप को व्यक्ति बढ़ा चढ़ा कर दूसरे के सामने पेश करने का प्रयत्न करता है कि उसे यश-बड़ाई-मान मिले,परन्तु आगे चल कर यह उसके हास्यास्पद पतन का कारण होता है । ईश्वर विश्वासी को भौतिक साधनों द्वारा अपने को बड़ा दर्शाने की आवश्यकता नहीं है। आज माता-पिता,शिक्षक-गुरु,समाज व राज दण्ड का भय समाप्त हो गया है अतः अपराध बहुत बढ़ गये हैं, परन्तु आत्मनिरीक्षण करने वाला स्वयं अपनी त्रुटियों को,उलटी आदतों को पकड़ता,सुधारता,दूर करता जाता है।

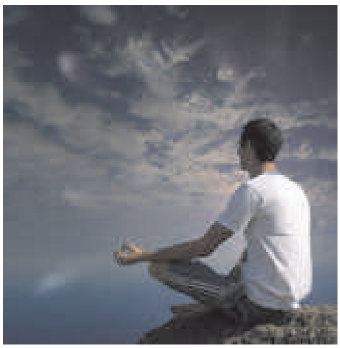

महत्व- एक आध्यात्मिक व्यक्ति के लिए वेद, उपनिषद् आदि शास्त्रों को पढ़ने से भी अधिक महत्वपूर्ण अपने मन को पढ़ना है। प्रशंसा का मोह,यश की कामना, आहंकारिक प्रतिक्रिया आदि वस्तुओं को छोड़ना साधक के लिए अनिवार्य है। यदि अन्तःकरण ठीक होगा तो सब कार्य सफल होंगे। अगले जन्मों में साथ चलने वाली वस्तु अन्तःकरण है। सांसारिक उपकरण यहीं रह जायेंगे। वेद में कहा है 'कृतं स्मर'- अपने किए कार्यों को देख। आन्तरिक शल्य चिकित्सा तो स्वयं करनी पड़ती है। अपने अन्तःकरण को स्वयं देखें। आन्तरिक शुद्धि हमें ही करनी पड़ेगी । नित्य देखें कि काम की वासना,क्रोधाग्नि,द्वेषादि पहले थे वैसे ही हैं या कुछ कम हुए?

कर्मों का लेखा जोखा देखने के साथ इन दोषों का निरीक्षण-परीक्षण भी करते जायें। अपने जीवन की ऋषियों, आप्त पुरुषों के जीवन से तुलना करें,उन्होंने कया किया क्या नहीं किया व हमने क्या किया क्या नहीं किया। हमारा जीवन सत्पुरुषों जैसा है या पशु समान। आन्तरिक निर्माण के बिना सुख चैन-शान्ति नहीं। अगले जन्मों में शुभाशुभ कर्मों के संस्कार ही,सम्पत्ति के रूप में साथ जायेंगे, अन्य कुछ नहीं। बाहर से तो चमक-दमक, पर अन्दर निपट अन्धेरा। व्यक्ति अपने दोषों को छिपाता है। पर ईश्वर से कुछ नहीं छिपा सकता। ईश्वर सब कुछ देख-सुन-जान रहा है।

एक दोष आ जाये तो उसके साथ-साथ अनेक दोष प्रवेश कर जायेंगे,एक सद्गुण जायेगा तो साथ मेंअनेक सद्गुण चले जायेंगे। एक दोष बीड़ी-सिगरेट का आने से फिर शराब,क्लब,जुआ,देर से सोना-उठना,अनेक दोष व्यक्ति में प्रवेश कर जाते हैं। एक गुण-नियम 'यज्ञ करना' अपनाने से प्रातः उठना,स्नान,व्यायाम,सत्संग,वेदपाठ, सन्ध्या,फिर समय पर सांसारिक कार्यों में जुटना आदि अनेक गुण प्रवेश कर जाते हैं।शुद्ध ज्ञान वाला ही दोषों से बच सकता है वरना गिरता-गिरता व्यक्ति कहाँ का कहाँ गिर जाता है। कामी में अन्य दस दोष अपने आप आ जाते हैं। क्रोधी को आठ दोष स्वयं आ जाते हैं।

जो खराब जानकर भी छोड़ते नहीं और अच्छा जानकर भी अपनाते नहीं वे असफल हैं। जो छूटने वाली हैं उन चीजों को एकत्र कर रहे हैं,जो साथ जायेगा उसका (धर्म का) बैंक बैलेन्स शून्य है।

आत्मा की वास्तविक इच्छा- स्वतंत्रता, आनन्द, ईश्वर-प्राप्ति है। दोषों से युक्त रहे या मुक्त रहे वह स्वयं के हाथ में है। जो लोग अपने अधिकारियों के समक्ष अपने दोष बतला देते हैं वे पवित्र हो जाते हैं।

दोषी होने के चार कारण

१. जो व्यक्ति ईश्वर को छोड़ देता है वह स्वयं भूल और दोष करता है।
२. माता-पिता गुरु-आचार्य, मित्र आदि के द्वारा भी व्यक्ति में दोष आते हैं। माता-पिता स्वयं बच्चों को मांसाहारी बनाते हैं। उपरोक्त माता-पिता आदि ठीक हों तो सुधरने में सहायक सिद्ध होते हैं।
३. समाज की परम्परायें, शैली, ढाँचे के कारण भी दोष आ जाते हैं। आज लोग खुल्लम-खुल्ला शराब पीते हैं,जुआ खेलते हैं,वीभत्स बोलते हैं। तुझे क्या और मुझे क्या यह परम्परा चली हुई है। कोई रोक-टोक नहीं।
४. राज्य-शासन गलत होने से भी जीवन पद्धति में बड़ा परिवर्तन होता है।

यदि हम पुरुषार्थ करें तो अन्यों से प्राप्त दोषों को हटा सकते हैं। गलत विचार उठने पर 'प्रतिपक्षभावना' उठायें तो दोष दब जाते हैं,कमजोर हो जाते हैं,अंत में दग्धबीज हो जाते हैं। अपने दोषों को जड़ मानकर उनको हटाने का प्रयत्न करें। ज्यों ही दोष उत्पन्न हों,तुरन्त एक तरफ धकेल दें। उससे विरुद्ध विचारना आरम्भ कर दें।

दोषों के विषय में मनुष्यों की स्थिति

१. कुछ लोग दोषों को जानते ही नहीं।
२. कुछ लोग जानते हैं पर दूसरे व्यक्ति से दोष सुनना नहीं चाहते।
३. कुछ लोग सुन तो लेते हैं स्वीकार नहीं करते।
४. कुछ लोग वाणी से तो स्वीकार कर लेते हैं पर मन से नहीं।
५. कुछ लोग मन से स्वीकार करके भूल जाते हैं।
६. कुछ लोग दोष हटाने के लिए पुरुषार्थ नहीं करते।
७. कुछ लोग पुरुषार्थ करते हैं पर उचित उपायों को नहीं जानते।
८. कुछ लोग असफल होने पर निराश हो जाते हैं।
९. कुछ लोग ईश्वरादि से सहयोग नहीं लेते हैं।
१०. कुछ लोग दोषों को दबाये रखते हैं। तनु करते हैं-कमजोर करते हैं।
११. कुछ दग्धबीज भाव बना लेते हैं,जिससे आगे कभी दोष नहीं होते।

सत्पुरुषों को योग्य है कि मुख के सामने दूसरे का दोष कहना और अपना दोष सुनना, परोक्ष में दूसरे के गुण सदा कहना। और दुष्टों की यही रीति है कि सम्मुख में गुण कहना और परोक्ष में दोषों का प्रकाश करना। जब तक मनुष्य दूसरे से अपने दोष नहीं सुनता वा कहने वाला नहीं कहता तब तक मनुष्य दोषों से छूटकर, गुणी नहीं हो सकता।

महर्षि दयानन्द
(सत्यार्थ प्रकाश पृ.९७)

मन-वाणी-कर्म से एक होने पर मनुष्य पवित्र हो जाता है। जो व्यक्ति ईश्वर को साथ लेकर चलता है वही दोष रहित होता है। दोष आने के समय सतर्क हो जायें। पुरुषार्थ से,मन को विचलित करने वाली तरंगों को रोक दें। साधक दोष को चाहते नहीं फिर भी हो जाते हैं। इसका एक कारण है कि साधक उन्हें रोकने के उपाय नहीं जानता। अभद्र करने के बाद हताश निराश होकर पुरुषार्थ करना छोड़ देता है। ऐसी अवस्था में दोष आने पर प्रतिपक्षभावना उठाएँ। आपत्तिकाल में ईश्वर सब से बड़ा सहयोगी होता है। उससे शान्तचित्त होकर सहायता माँगो, धैर्य-ज्ञान-बल माँगो। उलटे काम करने की अभद्र भावना हो तब अवश्य उसे पुकारें। यह दोष दूर करने की विधि है,एक विज्ञान है। काम,क्रोध,लोभ आदि आ सकते हैं, पर मैं इन्हें हावी नहीं होने दूंगा,इन पर हावी हो जाऊँगा। एक विषय पर अच्छे बुरे दो तरह के संस्कार काम करते हैं। करूँ या न करूँ। किसी की वस्तु ले लूँ, कौन देखता है, फिर सोचता है नहीं लूँगा। पुनः सोचता है आज अवसर है, इस बार ले लूँ, फिर नहीं लूँगा, इत्यादि विचारते विचारते ले ही लेता है परन्तु जो ईश्वर को सामने रखता है वह बच जाता है।

दोषों के जानने वालों से सहायता

सुख-शान्ति केवल बाह्य,सुन्दर निर्माण पर नहीं परन्तु आन्तरिक निर्माण पर निर्भर है। इन-इन दोषों के जानने वालों से

सहाय लेकर इनको दूर करने का उपाय करें।

१. कुछ दोष केवल हम जानते हैं। जैसे मानसिक काम,क्रोध,लोभ,हिंसा की भावना आदि।
२. अपने कुछ दोष हम नहीं जानते दूसरे जानते हैं।
३. कुछ को अन्य और हम-दोनों जानते हैं।
४. कुछ दोष विद्वान् जानते हैं।
५. कुछ दोष योगी-ज्ञानी ही जानते हैं।
६. सब दोष तो केवल ईश्वर ही जानता है।

अपनी तुलना ऋषियों से करने पर दोषों का पता लगाकर पुरुषार्थ करके सुधार सकते हैं। यदि दोष नहीं जानते-पकड़ते और जीवन जैसा चल रहा है उसी से सन्तुष्ट हो गये तो प्रगति रुक जायेगी। जैसे संविधान न जाना हुआ, न पढ़ा हुआ भी यदि गुनाह करता है तो उसे भी दण्ड अवश्य मिलता है। इसी प्रकार वेद व ऋषिकृत ग्रन्थ नहीं पढ़ा हुआ भी यदि उनके प्रतिकूल चलता है तो दोषी है व दंडित होगा। जो व्यक्ति एकान्त में बैठ अपने जीवन में झाँककर अन्तःकरण को चमकाते नहीं उन्हें शान्ति और आनन्द कहाँ?

ईश्वर के पा लेने पर सारे प्राणी आत्मवत् दीखने लगते हैं। सामान्य व्यक्ति जिस जीव से कुछ लाभ प्राप्त करता है उससे तो प्रेम,राग व आसक्ति रखता है और अन्यों में वैसा प्रेम, हित की भावना नहीं रखता है। यह व्यक्ति में दोष रहता है। प्रायः देखने में आया है कि व्यक्ति जितना अपना हित चाहता है उतना अन्य का नहीं चाहता। परन्तु ईश्वर प्राप्त योगी इतना ही नहीं आत्मवत् से भी आगे बढ़कर स्वयं कष्ट उठाकर भी दूसरे को सुख देता है। स्वयं दोष करके व्यक्ति अपने आत्मा को कोमल (नरम) निगाह से देखता है, परन्तु वही दोष अन्य करे तो कठोरता से देखता है। अपना बच्चा मारे तो कोई बात नहीं बालक है, दूसरे का मारे तो कुहराम मचा देते हैं।

योगाभ्यासी व्यक्ति पहले अपना दोष देखते हैं। साधकों में अन्य के प्रति आत्मवत् भावना उभरती है। जहाँ ज्ञान उत्पन्न हो जाता है वहाँ अज्ञान नहीं रहता। शोक, मोह, अविद्या समाप्त हो जाती है। अविद्या ही सारे अनिष्टों का कारण है। अज्ञान की निवृत्ति से काम, क्रोध, अधर्माचरण, अन्याय, असत्याचरण आदि स्वयं हट जाते हैं।

व्यक्ति अपने दोषों से समझौता कैसे करता है?

१. आज तो सारी दुनियाँ झूठ, छल-कपट आदि का व्यवहार करती है। मैं अकेला इनसे कैसे बच सकता हूँ। मुझे भी तो इस दुनियाँ में जीना है।

२. मैं कोई योगी ऋषि महात्मा नहीं हूँ कि मुझसे कोई दोष या भूल न होवे।

३. आटे में नमक के बराबर झूठ आदि तो चलते हैं यह कोई बड़ा दोष नहीं है,ऐसा विचारना।

४. अधिक दोषी को देखकर यह विचारना कि मैं तो उससे बहुत कम दोष करता हूँ।

५. जिन दोषों को हम छोड़ना (सुधरना) नहीं चाहते उन्हें उत्तम स्वरूप दे देना है।

६. अपनी छोटी त्रुटियों को एकदम स्वीकार करना,यह दिखाने के लिए मेरे में कोई बड़ा दोष नहीं है।

दोषों से मुक्ति कैसे हो?

बालकों को मातायें बिगाड़ती हैं। वे बच्चे को कहती हैं 'तू बड़ा अच्छा है' इससे वह बालक कुप्पा (अभिमानी) होता जाता है। फिर जब कोई उसके दोष कहे तो वह गुस्सा हो झगड़ा करता है-रोने लगता है। दोष बताने वाला हमारा हितैषी होता

है,सुनने में आनन्द अनुभव करना चाहिए। जो दोषों को मानता हुआ भी दूर करने का प्रयत्न नहीं करेगा वह कभी भी दोष से छूट नहीं सकता। भूल से झूठा दोष कहने वाले की बात से भी दुःखी न हों। जो दोष बताने वाले को निर्भीक कर देता है उसे लोग दोष बतायेंगे,यदि दोष बताने वाले पर नाराज होंगे तो कोई दोष नहीं बतायेगा। दोष बताकर कौन लड़ाई मोल ले? यदि दोष से सन्धि कर ली तो सौ वर्ष में भी नहीं छूटेगा।

मनोनियंत्रण द्वारा दोष निवृत्ति

१. अन्य के लगाये हुए झूठे आरोपों को हम स्वीकार न करें तो दुःख न होगा।
२. ऐसा कोई व्यक्ति न हुआ, न है और न होगा जिस पर आरोप या आक्षेप न लगा ।ईश्वर भी इससे अछूता नहीं।
३. झूठे आरोप, अन्याय आदि रुकेंगे नहीं, परन्तु अपने संस्कारों को ऐसा बाँध करके रखें कि वे भड़कें नहीं।
४. हम दूसरों की वाणी से दुःखी होते हैं तो उसके कारण हम ही हैं। बिना विचलित हुए सहन करना सीखें।
५. अपने मन में आग लगाने वाले हम ही हैं। दृढ़ संकल्प करें कि दुनियाँ का कोई भी व्यक्ति,अपने कटु विचार या वाणी से मुझे विचलित नहीं कर सकेगा।
६. अष्टांग योग से मन का नियंत्रण होगा। यह ईश्वर की उपासना से होगा। 'हे ईश्वर! मुझे शक्ति दो इन आरोपों से मैं न विचलित होऊँ और न ही उससे दुर्भावना रखूँ।
७. सुखी लोगों की विनम्रता उनके मन की शान्ति पर आधारित मैत्री है। और मन की शान्ति धर्मानुष्ठान से प्राप्त प्रसन्नचित्तता से उत्पन्न होती है।

शयन पूर्व आत्मावलोकन
इन क्षणों में कुछ इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर खोजना चाहिए।

१. कहीं मेरा व्यवहार समाज के व्यापक हितों का विरोधी तो नहीं है?
२. मैंने अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए किसी को पीड़ित या वंचित तो नहीं किया?
३. अच्छे और बुरे का, उचित और अनुचित का विवेक करने में कहीं भूल तो नहीं हुई?
४. मैंने कितना निर्माण किया और कितना विध्वंस?
५. अपेक्षित व्यक्तियों और कार्यों के साथ क्या सहयोग किया?
६. अवांछनीय तत्वों व घटनाओं का विरोध कर सकता या नहीं?
७. सामाजिक अन्याय और शोषण में मैं भागीदार बना,उसका शिकार हुआ या सक्षम प्रतिकार किया?
८. भविष्य में परिस्थिति विशेष में मेरा व्यवहार और प्रतिक्रिया कैसी होनी चाहिए?
९. ईर्ष्या, द्वेष, जलन, डाह आदि से तो युक्त नहीं हुआ?
१०. मेरे कारण किसी प्राणी की हिंसा तो नहीं हुई?
११. देश धर्म व मानव समाज के रक्षार्थ कोई परोपकार का कार्य किया?
१२. मेरे स्वभाव-वाणी-वर्ताव से कोई दुःखी तो नहीं हुआ? कोई पीड़ित, खिन्न, भयभीत वा त्रस्त तो नहीं हुआ?

हमारे जीवन में दुःख का कारण क्या है,उसे पकड़ने के लिए आत्मनिरीक्षण करें। हम क्रियाव्यवहार, वाणी आदि में दोष करते हैं,उसके पीछे हमारा अज्ञान है,कुवासनाएँ हैं। कूड़ा-कचरा देखेंगे ही नहीं तो साफ क्या करेंगे? अतः पहले सूक्ष्मता से दोषों को पकड़ें, फिर दूर करें।

मानव का एक भयंकर दोष-सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में उद्यत नहीं होता।

साभार-'ब्रह्मविज्ञान'
प्रकाशक-दर्शन योग महाविद्यालय
आर्यवन रोजड़

जल ही जीवन है

२२ मार्च यानी विश्व जल दिवस।

पानी बचाने के संकल्प का दिन। पानी के महत्व को जानने का दिन और पानी के संरक्षण के विषय में समय रहते सचेत होने का दिन। प्रकृति के खजाने से हम जितना पानी लेते हैं हमारी जिम्मेदारी है कि उसका सदुपयोग करें। पृथ्वी पर सभी प्राकृतिक संसाधनों के बीच सबसे आवश्यक पानी है। पानी की एक बूँद प्यासे आदमी के लिए सोने की एक बोरी से अधिक मूल्य की है। यदि हम में से हर एक आज के लिए पानी को बचाने के प्रयास करे तभी हम बाद में बचत कर पायेंगे।

जल संरक्षण अपने पीने के पानी की गुणवत्ता में सुधार करने में भी मदद करता है।

आईये हम पानी को बचाने के लिए कुछ आसान उपाय देखें –

१) नल से पानी के रिसाव को रोकें। विशेष रूप से आप अपने दाँत ब्रश या कपड़े धोने में नल चालू नहीं रखें।

२) वर्षा-जल संरक्षण करें। वाटर हार्वेस्टिंग आज सर्वाधिक आवश्यक है। वाटर हार्वेस्टिंग से अपने घर की छत का पानी एकत्रित कर अपने बोरवेल को चार्ज कर आप पूरे एक वर्ष के लिए पानी एकत्रित कर सकते हैं। यदि १००० वर्गफीट की छत है तो एक सेमी. वर्षा होने पर भी १००० लीटर शुद्ध पानी एकत्रित हो जाता है। वर्ष में यदि ४० इन्च वर्षा हो तो वर्ष भर पानी की चिन्ता ही न रहे।

३) पानी की आपूर्ति के उन क्षेत्रों में जहाँ असीमित पानी की आपूर्ति प्राप्त है, सीमित होना चाहिए। क्योंकि सार्वजनिक नल प्रायः खुले रह जाते हैं।

४) शौचालयों में पानी के रिसाव की जाँच करें। टूटियों से पानी न टपकता हो।

५) उस पानी का उपयोग करें जो फेंक दिया जाता है। यह पानी सड़कों की सफाई, बागवानी आदि के लिये इस्तेमाल किया जा सकता है।

६) कार या गाड़ी धोते समय नल के बजाय एक बाल्टी में पानी लेकर पोछे का उपयोग करना बेहतर होगा।

७) आजकल नगरों मे प्रायः आर.ओ. सिस्टम घरों में शुद्ध पानी प्राप्त करने के लिए उपयोग में लाये जाते हैं। इसमें तीन चौथाई पानी वापस निकलता है। इसे संरक्षित कर बाग-बगीचे में सिंचाई के काम में लाना चाहिये।

८) फल-सब्जियों को कटोरे में धोयें न कि चलते नल के नीचे।

९) फ्रन्ट लोडिंग वाशिंग मशीन में कम पानी खर्च होता है।

१०) डुअल फ्लश सिस्टम लगावें।

११) ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों को इसका मूल्य समझायें।

१२) मीडिया और दीवार पोस्टर के माध्यम से पानी के संरक्षण को बढ़ावा दें।

पानी को व्यर्थ न गवायें

{जल ही जीवन है, इसे व्यर्थ न गवायें। आज कल लोग छोटी-छोटी बातों के उपर लड़ रहे हैं परन्तु पृथ्वी पर मानव सभ्यता के अस्तित्व के ऊपर जो आसन्न संकट है उस बड़े प्रश्नचिह्न की ओर वे सोच भी नहीं रहे हैं और यह है पेयजल का संकट। ध्यान रहे पृथ्वी पर पानी यूँ तो ७५ प्रतिशत है परन्तु इसका ९७.५ प्रतिशत खारा पानी है केवल २.५ प्रतिशत ताजा पानी है। इस पेयजल का ७४ प्रतिशत हिस्सा ग्लेशियर में निहित है इसके अतिरिक्त जो पानी है वो भूमिगत है। इस प्रकार विश्व के कुल पानी का ०.३ प्रतिशत ही नदियों और झीलों में है। आगामी २५ वर्षों में विश्व की आधी आबादी पर्याप्त पेयजल से वञ्चित हो जायेगी और सिंचाई की संभावनाऐं न्यून हो जायेंगी। अभी भी विश्व के ८० देश जिनमें कि विश्व की ४० प्रतिशत आबादी रहती है गम्भीर जल संकट से जूझ रही है। बढ़ती हुई आबादी, ग्लोबल वार्मिंग और कम होती वर्षा के कारण आगामी ५० वर्षों में स्थिति भयावह हो जायेगी। पश्चिमी एशिया में यह खतरा सर्वाधिक है। इस क्षेत्र की ९० प्रतिशत आबादी के समक्ष गम्भीर जल संकट उपस्थित है। अफ्रीका में ३० करोड़ लोगों को पानी की कमी से अशुद्ध पानी ही उपलब्ध हो पाता है-रीमा }

इसीलिए वह समय आ गया है कि हम विश्व मानवता के समक्ष उपस्थित इस गम्भीर संकट के समय में जल की एक-एक बूँद को बचाने के लिए सन्नद्ध हो जायें। अतः होली के अवसर पर भास्कर ने जो आह्वान किया है कि 'सूखी होली भी नही अब से सिर्फ तिलक होली' के साथ जुड़ जायें।

आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय का सम्मान

अन्तर्राष्ट्रिय स्तर पर ख्याति प्राप्त प्रसिद्ध वैदिक-विद्वान् आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय का सम्मान आर्य प्रतिनिधि सभा, मुम्बई की ओर से आर्य समाज स्थापना दिवस के सुअवसर पर दिनाङ्क २३ मार्च २०१२ को मुम्बई में किया जावेगा। सभा-प्रधान बाबू मिठाईलाल सिंह जी ने बताया कि आचार्य जी का सम्मान एक उद्‌भट विद्वान् व प्रखर वक्ता के रूप में उनके योगदान के फलस्वरूप किया जा रहा है। इस अवसर पर आचार्य श्री को शाल, श्रीफल तथा सम्मान राशि भेंट की जावेगी।

सत्यार्थ-सन्देश परिवार की ओर से आचार्य श्री को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

नवलखा महल (सत्यार्थ प्रकाश भवन)

यह भवन है, विश्वविख्यात् पर्यटन स्थल, झीलों की नगरी, उदयपुर के हृदय स्थल में अवस्थित गुलाब बाग में, युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द की स्मृति को संजोए, पवित्र आकर्षक स्मारक, नवलखा महल। जहाँ मेवाड़ नरेश महाराणा सज्जनसिंह जी के निमंत्रण पर लगभग साढ़े छः मास विराजकर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कालजयी ग्रन्थ रत्न सत्यार्थ प्रकाश का प्रणयन सम्पूर्ण किया। जिसे श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास ने भव्यतम आकर्षक रूप प्रदान कर वैदिक धर्म (भारतीय संस्कृति) के प्रचार का अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र बनाने का प्रयास किया है।

नवलखा महल स्थित भव्य वातानुकुलित पूज्य माता लीलावतीं सत्संग भवन

प्रमुख आकर्षणः-

१. समृद्ध पुस्तकालय एवं वाचनालय।
२. सत्यार्थ प्रकाश रचनाकक्ष।
३. प्रभु भक्ति व महर्षि महिमा के गीतों की धुनों पर थिरकते व रंगीन आभा बिखेरते रंगीन फव्वारे।
४. भव्य यज्ञशाला जिसके प्रांगण में एक साथ ५०० व्यक्ति बैठ सकते हैं।
५. ६४ सुन्दर तैल चित्रों से युक्त,महर्षि के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालती भव्य दीत्रदीर्घा।
६. जीर्ण-शीर्ण नवलखा महल को वर्तमान स्वरूप प्रदान करके सर्वस्व न्यौछावर कर देने वाले,६० लाख रुपये न्यास को दान करने वाले (स्मृति शेष) पूज्य स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती,अध्यक्ष न्यास (पूर्व नाम श्री हनुमान प्रसाद चौधरी) की साधना स्थली-साधना सदन।
७. ऋषि-दर्शन मंत्रमुग्ध कर देने वाला दृश्य-श्रव्य कार्यक्रम (समय ११ से ५ बजे)।
८. घूमती रैक्स में सत्यार्थ प्रकाश के सभी २३ भाषाओं में उपलब्ध अनुवादों की प्रदर्शिनी।
९. महाशय धर्मपाल जी के अनुदान से निर्मित भव्य वातानुकूलित मल्टी मीडिया माता लीलावन्ती सभागार।
१०. बेबसाइट (www.satyarthprakashnyas.org) के माध्यम से विश्वभर में ऋषि जीवन तथा सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को पहुँचाना।

कैप्टन देवरत्न आर्य
मुम्बई

आर्य जगत् के आकाश पर चमकते हुए उन चंद नक्षत्रों में से एक हैं जिनका स्वर्णिम योगदान कभी भुलाया नहीं जा सकता। न्यास की स्थापना के तुरंत पश्चात् ही न्यास के कार्य को आगे बढ़ाने हेतु अनेक नवीन प्रकार की योजनाओं का सृजन कर उन्हें पूर्ण करने में साधक भी बने। पूज्य स्वामी विद्यानंद सरस्वती, स्वामी ओमानंद जी, स्वामी दीक्षानंद जी आदि का सम्मान समारोह आपकी ही योजना थी। न्यास की अति प्रसिद्ध चित्र-दीर्घा हेतु आर्थिक सहयोग के निमित्त आपने अनेकों को प्रेरणा दी। सत्य के प्रति दृढ़ आस्था संभवतः आपके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी ताकत है। परमात्मा से आपके निरामय दीर्घायुष्य के लिए सदैव प्रार्थी हैं ।

श्री बी.एल. अग्रवाल ने अपने पितृतुल्य ताऊजी पूज्य स्वामी तत्वबोध सरस्वती संस्थापक अध्यक्ष-न्यास, के दिशा निर्देशों को अपने जीवन को एक नई दिशा देने का आधार बना, न्यास को अपना संरक्षकत्व प्रदान कर, सर्वात्मना इसके योगक्षेम के बारे में चिंतन अपना स्वभाव बना लिया है। आप एक सफल वकील होने के साथ विस्तृत व्यापार को भी भली भाँति संभाले हुए हैं तथा उदारतापूर्वक इसे मानव-कल्याण में लगाने में भी समान रुचि रखते हैं व न्यास की समस्त योजनाओं को संबल प्रदान किये हुए हैं ।

श्री बजरंग लाल अग्रवाल
जयपुर

महाराणा सज्जन सिंह जी ! आप राजा हैं , न्याय के आसन पर विराजमान हैं । मैं निर्दोष पशुओं का वकील बनकर आपके समक्ष उपस्थित हुआ हूँ । देवता के नाम पर इन मूक पशुओं को मारने का क्या औचित्य ?

इन पशुओं को मारने वालों को सब मनुष्यों की हत्या करने वाले जानियेगा

मद्य–मांस का ग्रहण कदापि भूलकर भी न करें

महर्षि दयानन्द सरस्वती